

श्रीरसार्णव

जिसमें

अष्टनायकाओं अर्थात् स्वकिया, परक़ीया, मध्या, सामा-
न्या, उल्का, प्रौढ़ा, प्रगल्भादिके भेद व लक्षण
काव्य रीतिसे मनोहर दोहाकवित्तों में
वर्णित हैं

जिसको

श्रीकविकुलांबुधि कमलमिश्र वंशावतंस श्रीशुकदेव
कविने काव्यरस रसिकपुरुषोंके चित्तविनो-
दार्थ अतीव परिश्रमसे
निर्मितकिया

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
मई सन् १८९० ई० ॥



अथ रसार्णव प्रारंभः॥

दोहा।

काननटूटैंबिघनके[1] जाननकेयहज्ञान ॥ कजआनन कीज़ातिमिटि गजआननकेध्यान १ वैश्यवंशअवतंश मणि गुणगणकोदरियाउ ॥ कनकसिंहजाहिरभयो ज गमेंरैयाराउ २ दिल्लीपतिकेकाजजिन कोटिनकरी फतूह ॥ जगमगातजगपरअजों जाकेयशकेयूह ३ ति नतेंहिम्मतसिंहभो सबहिंदुनकोमैंड ॥ सुमृतिजानिज गपरकर्यो प्रगटपुण्यकोपैंड ४ पिरथीपालनकोभयो ताकेपृथ्वीराज ॥ मौजदैनकोभोजसम बड़ोगरीबनि वाज ५ महाबाहुताकेभयो ज्योंक्षीरधितेचन्द ॥ भू मिपुरन्दरसोंलगैलखत[2]पुरंदरनन्द ६ श्वेतकरीपुहुमी सकल जिननिजयशकीछांह ॥ मनहुँक्षीरकेसिन्धुतेका

---

१ जाननेंवाल्लोंके जानक हैं जाननेवाले ज्यों सुजान ताको बहुवचन जानन यहां प्राही एकनन पर दोऊपदु काकु लगाइये   २ पुरन्दरपुर को आनन्द देवेवारो अथवा यशादि करके इंद्रहूके आनन्द ॥

ढ़ी अवैबराह ७ मरदानोताकेभयो मरदनरैयाराउ ॥
जगजाकोअबिचलवचन अंगदकेसोपाउ ८ मरदन
कविसुखदेवसों मान्योनिपटसनेहु॥ कह्योनायकानाय
कनि बरणिग्रन्थकरिदेहु ९ मरदानेकेहुक्मते मिश्रसुक
विसुखदेव ॥ कहतलक्षिलक्षणसहित न्यारेन्यारेभेव
१० स्वीयापरकीयासुत्यों सामान्यामनआनि ॥ ती
निभांतितियभेदये सुकबिनकहेबखानि ११ स्वीयाक
हियेआपनी परकीयापरवाम॥ सामान्यातासोंकहें जा
कोधनसेकाम १२ लक्षणयेसुकियानके बरणतहैंकबि
राज ॥ पतिकीअतिसेवाक्षमा शीलसुधाईलाज १३
यथा। सवैया ॥ कोराननांघिकटाक्षसकै मुसुक्यानिनकै
सकैहोठनबाहिर । मंजुमुहामृदुबोलनिकी गतिप्यारेके
काननहीलगिजाहिर । अंगबिभूषितकैकोसकै भयेभू
षितअंगनहीतेजवाहिर । सूधीसुधासेसुभायभरी पै
खरीरतिकेलिकलानिमेंमाहिर १ ॥ दोहा ॥ सोऊसुकि
यानायका पंडितकहतबिचारि ॥ मुग्धामध्याप्रगल्भा
तीनभांतिनिरधारि १४ ॥ मुग्धालक्षण। दोहा ॥ कछुत
रुणाईकीझलक झलकतिजाकेगात ॥ तासोंमुग्धाक
हतहैं जेकबितासरसात १५ ॥ उदाहरण। सवैया॥
लरिकाईकेखेलछुटेनवनाइ अजोंनमनोजकेबानलगे।
तरुणापनआयोनहींसजनी तरुणीनकेबैनसुहानलगे।
हरिकोहैंकहांकेहैंकौनकेहैंन्येबखानकछूमुँह[१]आनलगे।
अबतौतिरछेचलिजानलगे दृगकानलगेललचानल

[१] आवने॥

गे २ ॥ दोहा ॥ सोमुग्धाहैभांतिकी सुकविनकियोविबे
क ॥ ज्ञातयौवनाएक अज्ञातयौवनाएक १६ ॥ अज्ञातयौ
वनालक्षण। दोहा ॥ यौवनजोनिजदेहनहिं आयोजान
तिबाम ॥ ताहीसींसबकहत अज्ञातैयौवनानाम १७
यथा। सवैया ॥ बूझ्योमेंजाइसयानीसखीन भयोजियमें
डरुखाइहहाहै। सूधेनकाहूवतायोकछू मनयाहीतेमेरो
भयोरिसहाहै। मोहिंलगैंछतियांगरुई दिनद्वैतेभयो
यहशोचमहाहै। काहेतेऊतरुदेतिनतू अँचरामुखदैअँ
ठिलातिकहाहै ३॥ अथ ज्ञात०। दोहा ॥ यौवनजोनि
जदेहमेंआयोजान्योबाम ॥ कविपंडिततासोंकहें ज्ञातयौ
वनानाम १८ ॥ यथा। सवैया ॥ रंगअनूपदैअंगकछूनख
तेशिखलौंफिरिशोधिसुधारे। सीखिबेकोतरुणापनके
भयेबालपनेकेबिलासबिसारे। सूधेहिदेखतहेदृगजेतत
कालहितेऊतिरीछेकैंडारे। औचकआयोकहांतेधौंयौव
नखोइबेकोअबख्यालहमारे ४ ॥ अथनवोढा। दोहा ॥
मुग्धापनमेंहोयजो वहैनवोढ़ाआहि ॥ डरपैसकुचैरति
कथा सुनतनभावैजाहि १९ यहैनवोढ़ानारिकीजग
जाहिरहैरीति ॥ नयेनयेभूषणनिसों परगटराखैप्रीति
२० ॥ यथा। सवैया ॥ भूखनप्यासकछूसिगरोदिन भा
वतभूषणभेषबनैबो। लोचनलाजलगीपैरहे रतिकेघर
कोमनआवैनऐबो। केलिकथानसुनैडरपै नसुहाइस
हेलिनकोसमुझैबो। प्यारेलईछतियामेंछपाइ पैचाहेत
ऊछलसोंछुटिजैबो ५ ॥ पुनः ॥ खेलतहीसजनीनकेसंग
नईदुलहीसुरनारिकीनाई। जैसीकछूछबिलागतनीकी

सुतोकेहुँभांतिकहीनहिंजाई ५ ताहीसमयतहँआइबोला
लको स्यालेहिमेंकह्योकाहूलुगाई। चौंकिउठीथहरानी
खरी मुखपीरीपरीअांखियांभरिआई ६ ॥ अथविश्रब्धन
वोढा। दोहा ॥ कछुकछुटैरसकुचअति पतिसोंकछुकप
त्याय ॥ सोविश्रब्धनवोढ़तिय बरणंतसुकबिबनाइ २१
यथा॥सवैया॥ जंघनिजोरैंकठोरज्योंपाहन[1] बाहूनबीचउरो
जनिगोवति। नीबीकीगांठिलगावतिगाढ़ीके नाहकयों
सिगरीनिशिखोवति। लालनकेमनमेंयहिभांति घरीघ
रीकामसँतापसमोवति। लाजंकोऔडरकोपटुतानेयों
प्यारीपियापियकेसँगसोवति ७॥ अथमध्या। दोहा॥ ला
जकामजाकेजबाहिं मनमेंहोतसमान॥ तासोंमध्याकहत
हैं पण्डितसुकबिसुजान २२॥ यथा॥कवित्त॥ सामुहेजो
प्यारेकेनिहास्योचाहूंतौसुवह आगेआनिआड़ीहोतिस
कुचनिगोड़ीहै। नीचेनैनेंकियेमारुमास्योचाहेदूजेप्यारो
वेनीगहेआंगुरीदैउठावतठोढ़ीहै। कहाकहोंभईदुहूँभां
तिनकठिनमोहिं तातेकामकेलिकीकथाऊमेंवछोड़ीहै।क
हिसकोंमैंनतैसीजैसीलाजमैनकीन्ही मोहिंदुखदेबेकोदु
हूनहोड़ाहोड़ीहै ८॥ अथप्रौढा। दोहा॥ कामकलापरवीन
अतिराखैपतिहिरिझाइ॥ तासोंप्रौढ़ानायका पण्डितक
हतबनाइ २३ सुघराईकीमूलअरु सहैनछिनकुविछोह॥
रतिआनँदसरमगनह्वै हियेकरतिसम्मोह २४॥ यथा॥सवै
या॥ केलिकेछोड्योनभावैछबीलो छपाभईछीनअथैगये
तारो। [2] भोरुभयोनजनायोचहै पियकोतबयोंकछुक्योंतु

---

[1] भुजन है और फूलनवारी कलीनकों॥

विचारो। चन्द्रमुखीचतुराईकरी हियमेंतेहरैंहरैंहाररनि
कारो। श्रवणसमीपतेलैकेसरोज दुराइकैदूरिकहूँगहि
डारो ९॥ संमोहः। कबित्त॥ छूटेबारहारनिसोंउरमिउर
भिरहे नखशिखहियोनखक्षतनिसोंछयोहै। आलसबि
लन्दरदछदनिमेंरदछद अंगअंगकेसरकोरङ्गमिटिगयो
है। कोह्यांमोहिंल्यायोकापैआईकाकेकाजदई कौनठौर
कौनेयहकौनठाठठयोहै। सुरतकेसुखमेंसुरतिकछुहूनर
ही पीछेजाइजान्योंमैंकियहशूलभयोहै १०॥ अथधीरादिभे
दकथन। दोहा॥ जंबहींमध्याप्रगल्भा मनमेंआनैमान॥
तबधीरादिकभेदये तीनभांतिकेजान २५ धीराऽधीरा
औरपुनि धीराधीरामानि॥ सोधीरारिसप्रगटकै जांकी
जातिनजानि २६॥ अथमध्याधीरा। कबित्त॥ भूठीवेई
प्यारेतुम्हैंदोषजेलगावतीहैं तुम्हैंसबसाधुनमेंसरसवि
शेखियतु। रातिकोतोआवतवैहोतजेहैंचोरतुम आवत
होभोरयातेसाहनमेंलेखियतु। नैनहैंनलालयेमहाउरोनं
भालयह ओंठनमेंकाजरकीरेखऊनपेखियतु। आरसी
लौंनिरमलरावरेकिअँगतामें मेरीचारुचूनरीकोप्रतिबिं
बदेखियतु ११॥ अथमध्याअधीरा। दोहा॥ प्यारेसोंरिस
आपनी राखैजोनदुराइ॥ मध्यअधीराकहतहैं ताहिसु
कबिसमुदाय २७॥ यथा। सवैया॥ कहुँअंजनलीककहूँल
गीपीक कहूँधरेजावककेसरिहो। बिनडोरनहीपहिरायेह
हरा जिनराखेहराज्योंहियेधरिहो। जिनआपनीचूनरी
केरँगसोंरँगिलालकियेजिमिचूनरिहो। उठिभोरहींआ
येहोभौनहमारे जुवैसुनिहैंतोकहाकरिहो १२॥ अथमध्या

धीराधीरा दोहा॥ कछुकटुरीउघरीकछुकरिसजुजनावैनारि॥ मध्यअधीराधीरातिय तासोंकहतविचारि २८॥ यथा॥ सवैया॥ सांवरेहोपैलिलारकीलालीतेकोतुमकोअबलालन केहैं। हूंतोसयाननजानतिहौं मोहिंबूझिहैकोऊतोबोल नऐहैं। ओंठतिहारेतिहारेहिरंगके त्यौंयहंपीकलगीब हुतैहै। मोहिंछुवोनहहाहरिऐसंही मेरियोदेहकहूँरँगि जैहै १३॥ पुनः॥ बोलतिआननकीचोकिये नहिंदंतन कीरुचिकोपरसावति। आइयेजूशुभआसनपैंकहै बां हगहैनहियोहरसावति। भूलिगयेपथभोरेपिया तुम योंबहुव्यंगनकोबरसावति। काचरचेसेफिरोगजराज सेकैचरचैरिसकोदरसावति १४॥ अथप्रौढाधीरा। दोहा॥ रतिकोरूखीह्वैरहै पीतमसोंजोनारि॥ प्रौढ़ाधीसकहत हैंतासोंसुकबिबिचारि २९॥ सवैया॥ आवतहीउठि आदरकीन्हौं कछूगुपाअवगुणऊनगनायो। जान्यो किजोकछुजानिहैंतो अबहींफिरिचाहियेमोहिंमनायो। ठाढ़ीसंहेलीजितैमिसुघालि तितैतकितेहिकोल्योरसमा यो। ऐसीकछूपरवीनतिया पियकोरसहीरसरोसजना यो १५॥ अथ प्रौढ़ाअधीरा दोहा॥ पियकोडरुदैमारुदैजो रिसदेइजनाइ॥ प्रौढ़अधीराकहतहैं ताहिसबैकबिरा इ ३०॥ यथा॥ सवैया॥ बिंबसेओंठनपैसजनीउमगीछ्वि है तबनीलदुकूलसों। तेरेसोओंठकीलालीललाके लिलारमेंसोहतिओरहीशूलसों। काहेकोभौंहैंचढ़ाव तितेहरहेंनिजगेहमेंहीहरिभूलसों। बूझियेतोहिंनयों चहिये डरपावतिमारिगुलाबकेफूलसों १६॥ अथधीरा

धीराप्रगल्भा[1]। दोहा ॥मारैडरपावैजुतियरतिकोरूखीहोय॥ धीराधीराप्रगल्भाताहिकहतसबकोय ३१ ॥ यथा। सवैया ॥ भोरंभयेमनभावनआये बनीबिनडोरनहीउर मालहैं । प्राणपियारीरहीहैनिहारि नरूखेइबैनकहेनर सालहैं । नेकुललाढिगबैठनदीनो पियाइतनेइमेंकीन्हे निहालहैं । बांहगहीजबहींतबपैभई भौंहैंतिरीछीभये हगलालहैं १७॥ अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा दोहा॥ तेऊपुनिद्वैभांतिकी ब्याहीतरुणीदोइ ॥ एकज्येष्ठाकहतहैं एककनिष्ठाहोइ ३२ ॥ जापरअतिहितनाहको तियासुज्येष्ठा आहि॥ जापरघटिहितनाहको कहतकनिष्ठाताहि ३३ यथा।सवैया ॥ अनुरागसोंखेलिकैफागथक्यो रह्योकंतइकंतकहूंटरिकै । पहुँचीदोउसौंतेंसमीपतहां दुरिअंजन आंगुरीमेंकरिकै । यहपेंचुकियोतबछैलछबीले कछूछलरीतिहियेधरिकै । मुँहएककेदीन्हींगुलालमुठी लईएक कोतौलौंभुजाभरिकै १८॥ इतिस्वीयायां।अथऊढाऽनूढा। दोहा ॥ [2]कहीजुपरकीयातरुणि ताहिद्विविधकैजानि ॥ ऊढाकहियतएकहै एकअनूढामानि ३४ ब्याहीहोइजु औरसों करैऔरसोंप्रीति ॥ ऊढातासोंकहतुहैं जाकीहै यहरीति ३५ ॥ यथासवैया ॥ एकवहैमुखदेखोइ भावतु वादिसबैमिलिमोड़तीश्राहो । कीजैकहावसहैनकछू सिगरीमिलिडाहनआईतोडाहो । मोहिंनकाजकछूकुलकानिसों जाहिनिबाहनीहैसोनिबाहो । मेरेतोमाईवहै उरआनि रह्योगड़िगैयनकोचरवाहो १९ ॥ दोहा ॥

---

१ प्रौढ़ा २ अन्यवचन में ३ समुझाइबे के रस्तेन को ॥

अनब्याहीकहुँपुरुषसों प्रीतिकरैजोनारि ॥ ताहिअनू
ढ़ाकहतहैं पंडितलोगबिचारि ३६ ॥ यथा सवैया ॥ दे
ख्योचहूंनिशिवासरहूपैन देखिबेकीकछुजानतिघातें ।
मैंधौंकहांतेगईवहिओर गईपरिमेरीधौंडीठिकहांतें ।
ब्याहिदियोचहैतातकहूंमोहिं मैंसखितोहिंसिखावतिया
तें। तूगुरुलोगनसोंनकरैकिनकोन्हसोंमेरेइब्याहकीबातें
२० ॥ अथगुप्तादि दोहा ॥ योंपरकीयातरुणिके भेदऔरौ
जानि ॥ पहिलेहीगुप्ताकही बहुरिविदग्धामानि ३७ मु
दिताकहिपुनिलक्षिता कहीसुकविशिरमौर। अन्यसँभो
गसुदुःखिता गनियेयाहीठौर ३८ त्रिविधसुअनुसैनाबहु
रिसुकबिनकहीबिचारि ॥ भयोरुकैहैहोतयों सुरतात्रिवि
धनिरधारि ३९ सुरतछपावैजोसुवहसुरत गोपनाहोइ॥
क्रियावचनकीचतुरई कहीविदग्धादोइ ४० बीतेसुरतका
उदाहरण। सवैया ॥ बागकीबावलीपानीकोसासु पठाव
तिमोहिंकडीफिरिबोलै । तापरयेसिगरीमिलिमेरें च
वावहिकीवतियांगादिढोलै । भौरेधौंकाहेकेभौंरभिरे ह
ठिकाटनओठडुलायेनडोलै । कांटकटीलीहैंवेलितहां
लगें जातमेंगातखरीखरछोलै २१ भविष्यसुरतउदाहर
ण। सवैया ॥ भूलेहुनँदकेभौननजैहोंमैं तूकिनकेतिक
सौंहनद्यावै। पाखेपखेरुअनेकतहां हियोदाड़िमजानि
सुवाझपटावै । ओठमेंदागकहूँपरिजाय तोमोपैनकेहूँ
कछूकहिआवै । कैसीकरूँकहुँमोमुँहचन्दकी ओरचको
रजोचौंचचलावै २२ ॥ वर्तमानसुरतउदाहरण। सवैया ॥

ज्योंज्योंचवावचलैचहुँओर धरैचितचायग्रेत्योंहिंत्यों चोखे। कोऊसिखावनहारनहीं विनलाजभये बिगरैल अनोखे। गोकुलगांवमेंएतीअनीति कहांतिदईधौंदई विनजोखे। देखतीहोमुहिंमांझगलीमें गह्योइनग्रानि धौंकौनकेधोखे२३॥ अथक्रियाविदग्धावाग्विदग्धायथा। दोहा॥ करैक्रियाकरिचतुरई क्रियाविदग्धासोइ॥ बचननकरै जुचतुरईवाग्विदग्धासोइ४१॥ अथक्रियाविदग्धासवैया॥ आगिकेव्याजतेभाजिचलै उतपानीकीगागरिलैउठि धावै। कोऊकहूँपठयोचहैकाहु तहांहठिजैबेकोआपुहि आवै। एकौघरीघरमेंनटिकै उतजैबेकोऊतरुसौकव तावै। ज्योंज्योंबजैउतबैनत्योंत्योंइतमैननवेलीकोनाच नचावै २४॥ अथवाग्विदग्धा। सवैया॥ कातिकीन्हैबे कोलोगचले अपनोअपनोसबहीसँगजोरयो। राखि गईघरसूनेबिसासिनि सासुजँजालतेमोहिंनछोरयो। हैतोभलीघरहीजुरहोतुम योंकहिकैननदीहुँनिहोरयो। प्यारीपरोसिनिसोंकह्योटोरि परोसीकेकानसुधासोनि चोरयो २५॥ अथ मुदिता। दोहा॥ सूनेघरमेंकेलि को सुगमब्योंतुसबदेखि॥ मुदितातासोंकहतहैं सु खपावैजुविशेखि ४२॥ यथा सवैया॥ सांसुबकैननन दीलरिबोकरै याकोपैस्यालयहैदिनरातिहै। सूनो निकेतजु नेकऊपावैखरीतवरीझभरीललचातिहै। नीरेग्रटापरपीतमैपेखितियाअतिही अँगिरातिजम्हा तिहै। योंकछुहोतिहैफूलहिये अँगियाफटिकोटिकटूक ह्वैजातिहै २६॥ अथलक्षिता। दोहा॥ जाकीपियसोंप्री

तिसब सखीलखीजोहोइ ॥ ताहिलक्षिताकहतहैं कबि पंडितसन्नकोइ ४३॥ यथा सवैया ॥ तूइतयौबनरूपभ री उतहू मनलालकोलालचहाहै । तेऊकछूबिनतीसी करीउनहूंबड़िबेरलौंखाईहहाहै। देखिदुहूकोदुहूपरप्या र भयोजियमेंसुखमोहिंमहाहै । प्रीतिबढ़ोदिनहूंदिन दूनीदुरावती काहेकोहोतकहाहै २७ ॥ अथान्यसंभोगदुःखिता।दोहा ॥ निजपियकेरतिचिहनकहुँ औरतरुणिके देख ॥ अन्यसुरतिदुखितासुवह दुखपावैजुविशेख ४४ यथासवैया ॥ देहकँटीलीकँपैअजहूँलगि बैननआवतवे गिसुभाइनि । न्हायसीआईहौजायकहूँते बनायकहौक छुमेरीगुसाइनि । मैंतोपठायोचहौंतुमहींतुम पैनहींचूक तीआपनेदाइनि । भेदकहैसबकांकोतिहारे लग्योयहके सरकोरँगपाइनि २८॥ अथानुसैना। दोहा ॥ मिट्योजा निसंकेतगृह शोचकरैजौदार ॥ तिरिविधिअनुसैनाक हत सुकबिनकेसरदार ४५ मिटेकेलिघरकेकह्यो पहि लोभेदसराहि ॥ होननपायोकेलिघर भेदऔरयहआ हि ४६ आपुनपहुँचीकेलिघर प्योढैआयोहोइ ॥ करि अटकरपछिताइजो भेदतीसरोसोइ ४७ प्रथमभेदयथा। सवैया ॥ नीचियेनारिकियेरहैनारि मुरारिकेप्रेमपगीक छुऐसे।काहूकिबातसुनैसमुभैनहिंबोलतिबोलवखाइहरे से। खेतकट्योसुनिकैंबिलखीअबच्चित्रलिखीलखियेभइ जैसे। ऊखमेंजोरसपावतही अबसोरसकोतियपायहैकै से २९ ॥द्वितीयभेदयथा। सवैया ॥ छायरहीबहुफूलनकी

---

१ ऊपर ॥

रजमानोमनोजवितानतनेंहैं। सीरिसमीरसुधाहुतेसौगुने डोलतमन्दसुगन्धसनेंहैं । गुञ्जतपुञ्जहैंभौंरनकेतहँ होतकपोतकेघोसघनेंहैं । शोचकहाजुनज्वारिजमीयेत मालकेकुञ्जतोवेईबनेंहैं ३० ॥तृतीयभेदयथा। सवैया.॥ कहूँकीवेकोभेंटसहेटबदीकरि साहसुबेरबड़ीवितई। सुनीकेलिनिकुञ्जतेआवतंद्वारपै बांसुरीबाजतिमैनमई । तियकीनोकछूओकछूकरिबेरह्यो बीचहीऔरकीऔरैभई। गृहकाजकहांअरुलाजकहां अबतोसिगरीसुधिभूलिगई ३१ ॥ अथकुलटा। दोहा ॥ नाहअनेकनकोसुरत अतिहीभावतजाहि ॥ तासोंकुलटानायका सबकबि कहतसराहि ४८ ॥ यथा। सवैया ॥ काहूसोंनैननहीमुसक्यांतिहै काहूसोंकौनोलगावतिघातें। काहूसोंभावसोंहचंद्रायके बैनसुनावतिमीठेसुधातें । जानीनजातिहैं जातिकहां क्षणमेंफिरिआवतिहैघोंकहांतें। तोहिंपरीयहबानिकहा सिगरोदिनयेईसुहातीहैंबातें ३२ ॥ अथसामान्या। दोहा ॥ प्रीतिजोराखैसबनसों धनहीधनके काज ॥ तासोंसामान्याकहैं सुकबिनकेशिरताज ४९ यथा।सवैया ॥ कछुनैननचाइनचावतिभौंह नचैकरदोऊ औआपुनचै । बरुछांहछबीलीसौंछ्वैकहुँजाइ तहींसिसकीनकोशोरुमचै। कुचऔकचभारनहीअलवेली को बारहजारकुलंकुलचै। लखिलालकेलालकीमालगरे व हैलीवेकोबालयेख्यालरचै ३३ ॥ दोहा ॥ मानवतीअरुगर्विता ताकोदुविधविवेक ॥ प्रेमगर्विताएकअरु रू

१ घाफो ॥

पगर्विताएक ५० ॥ अथमानवती। दोहा ॥ मानिईरषा जोतरुणि पियसोंठानैमान ॥ मानवतीतासोंकहैं मानो त्रिविधबखान ५१ ॥ यथा सवैया ॥ बैठेहुतेकहुँपीउपियावड़ी बेरलौंबातैंभईमनभाई। कामकलोलनदोऊरहेछकि औरकथाकहियेकहैंताई। सौतिकोनाउँकढ्योपियकेमुँह औचकचूकभईचतुराई। प्यारीकेक्षैगयेनैननिचोहैं गईफिरिभौंहकमानकीनाई। ३४ ॥ दोहा ॥ लघुमध्यमगुरुभेदते मानहुतीनिप्रकार ॥ न्यारेन्यारेकरिसकत सुकबिनकेसरदार ५२ ॥ अथलघुमान। दोहा ॥ औरतरुणितनतकततिय पियहिजोदेखैआइ ॥ तबउपजैलघुमानकछु ख्यालहिंमेंमिटिजाइ ५३ ॥ यथा सवैया ॥ पीउपियानिजकेलिकेमन्दिरखेलतहेंकछुख्यालनवीनो। झांकहूंझांकीझरोखेपरोसिनि ओटदियेअँचरामुँहदीनो। प्यारेकीडीठिगईउतदेखिकै प्यारीकियोमनमानअधीनो। प्यारेकहीकछुहांसीकीबात पियापैरह्योनंपख्योहँसिदीनो ३५ ॥ अथमध्यममान। दोहा ॥ तियढिगपियमुहँतेजु कहुँसौतिनामकढ़िजाय ॥ मध्यममानतहांमिटै सौंहनिपरसेपाइ ५४ ॥ यथा सवैया ॥ औरकोनाउँनजानोंनलेउँ सुह्यांलगिमोमनहैयहभोरो। वादिहीकाहेकोरूसनठानती वादिहीकाहेकोभौंहमरोरो। सौंहनहूँनहिं मानतीहौसखियोसिगरीकरिहारिनिहोरो। तोअबमेमुँहऊपरराखिये नेकलौंआपनोईमुँहगोरो ३६॥ अथगुरुमान। दोहा ॥ औरनारिसंभोगते मानहोतगुरुआइ ॥ क्योंहूँकरिकैमिटतवह परसैपाइव

स्याइ॥५५॥यथा।कबित्त॥औरमनभावतीकेभौनतेजुआये इतएकौरतिचीह्नोनदुरायसकेयदुराइ।दीरघउसासेंऐंठि नेकुननिहारेंनीठिदीठिकेसतरप्यारीपीठिदेरहीरिसाइ। नीचेनैनकियेमनभावनसकुचियनि लगेमनावनऔरभां तिनसकेमनाइ। पगमहाउरलालीलालमेटीभालसोंऔ द्दगनकीलालीमेटीभूठीसांचीसोंहैंखाइ३७॥ अथप्रेमगर्वि ता।दोहा॥जोनिजपियकेप्रेमकोगरबजनावैनारि॥प्रेमगर्वि ताकहतहैं ताकोसुकविविचारि ५६॥यथा सवैया॥खेल्यो चहैकछुखेलतोमोहिंसोंखेलत औरसोंभूलेनभावै।चित्र मेंमेरइंचाहैचरित्रतमाशेपैकोउकितेकबतावै।मेरोइध्या नधरेरहैंध्याननऔरकेहूनहिंधोखेहुध्यावै। देखिबेकोजि यव्याकुलह्वैअँचराजुकहूं मुँहऊपरआवै३८॥अथरूपगर्वि ता।दोहा॥ रूपआपनेकोरहे गर्वकियेजोबाम।ताहीसें सबकहतहैं रूपगर्वितानाम ५७॥यथासवैया॥ नैन निहारिबोईकरें रोजसरोजनिलैसमताहिलगावै। अं गकेरंगमेंरीझिकै सोनेकेरंगनिकीउपमाउपजावै। ओ ठनकीछबिमेंजुछके सुपकेकुंदुरूढिगआनिलगावै। बै ठेखिझैबोकरैइनभांतिनकैसेधौंआहियेमोहिंनभावै३९॥ अथाष्टनायकाबर्णन। दोहा॥ प्रोषितपतिकाखंडिता कल हंतरितानाम॥ विप्रलब्धउत्कंठिता वासकशय्याबाम ५८ स्वाधिनपतिकाकहिबहुरि अभिसारिकाविचारि॥ बहुरिप्रवत्स्यतभर्तृकाकहियतनौमीनारि ५९॥ अथप्रो षितालक्षण।दोहा॥ प्यारोजायबिदेशजबतियाजोव्याकुल

होइ ॥ प्रोषितपतिकानायका ताहिकहतसबकोइ ६० ब्यापतिज्ञाकीदेहमें दशौअवस्थाआइ ॥ सुकबिनया केप्रकटकैयेईकहेसुभाइ ६१ ॥ मुग्धाप्रोषितायथा।सवैया ॥ नैनूनमेंभरिआवतनीरपै बाहिरजाहिरहोतनआइहै । बोल्योचहैतोगरोभरिआवै सखीनहुंमरहिजातिलजाइ है । औरबियोगिन्योंहैपैअनोखोलग्योकछुयाहिबियोग बलाइहै । आजुइकेबिछुरेयहशूलहै औधिलौंकैसेधौं कोपहुंचाइहै ४० ॥ मध्याप्रोषितायथा।सवैया ॥ हीतो बिथाबहुतैपैभई अबचौगुनीचंदनकीचरचाही । योंहीं दवासेलगेईहुते अवचांदनीआयदशौंदिशिदाही । औधिलौंजीवनऔधिबदैसखितूकहितेरेकहामनमाँही। चाहतियोंकह्योप्यारीसखी सोपैलाजनतेकहिआवत नांही ४१ ॥ प्रगल्भाप्रोषितायथा।सवैया ॥ आजुहिंप्या रोचल्योयहआजुहिंआई दवाइबिथातनुजीतिहै । पैं डोनिहारातिआइबेकोकछुआजुहिऔरैभईपरकीति'है । कंठह्वैप्राणरहेअबहींअबऔधिकेपैबेकी कौनप्रतीतिहै। द्योसतोबीत्योमरूंकरिकैअब आइहैरातिसोकैसेधौंबी तिहै ४२॥ परकीयाप्रोषितायथा।सवैया ॥ काहूसोंकाहूकह्यो हैपुकारिकीं गौनकियोकहूंनंदकुमारहै। योंसुनिबालगई मुरझाइरहीतनकोतनकोनसँभारहै । डीठिलगीकिधौं मठिलगीअब आईइहैंसबहीकेबिचाररहै । कोऊरचैंस खिव्योंतगुणीनकोकोऊत्योंऔषधकोउपचारहै ४३ ॥ सामान्या। सवैया ॥ जोपियमोसोंजुदेह्वैरहें तौरहैंहमसों

१ प्रकृति ॥

तौरहयोनाहिंजैहै । योंकहिवारविलासिनिवाहिरजाहिर कीन्हीविथावहुतैहै । जानतिहैकिसखीकहिहैं जबभाव तोभौनहमारेहिऐहै । मानिकैहेतसमेतजँजीरन हीरन हीकेहरापहिरैहै ४४ ॥ अथखंडितालक्षण । दोहा ॥ भोर औररतियंसुरतिके चीह्नसहितहीधाम ॥ आयोजाको प्राणपतिवहहैखंडितानाम ६२ असुवाऊंचीसांसअरुचिं तासोंसंताप ॥ चुपरहिवाउरहनकरे रचिआलापकला प६३ ॥ मुग्धाखंडितायथा सवैया ॥ जावकशीशधरेउठिभो रहीपीउकहूंतेपियाढिगआयो । कौनेदियोयहभालमेंला लगुलाबकोफूलकहोकहँपायो । योंकहिमांगतिखेलिवे कोलड़वावरीबातनज्योंवहलायो । प्योहँसिकेमुहँसोंमुँ हळूवाइलिलारसोंप्यारे लिलारलगायो ४५॥ मध्याखं डिता । सवैया ॥ हारवड़ेऔउरोजगड़ेउरयोंनिरख्योढिग प्योपरभातहै । ताहीसमयनखतेशिखलौंअतितीक्षणता पगयोचढ़िगातहै।चित्रमेंकाढ़ीसीठाढ़ीठगीसीरहीकछुदे ख्योसुन्योनसुहातहै । रोचनसेभयेलोचनलालसकोचन तेनकहीकछुबातहै ४६ ॥ प्रौढ़ाखंडिता सवैया ॥ आइयेवैठि येआजअजौंअँखियानतेआरसहोतनहीनो ।सांवरेअंग मेंसांवरोईकछुआजविराजरह्योपटभीनो । भागतेआये होभौनहमारेपैकाहूँशृंगारभलोयहकीनो । ओठमेंअं जनरेखदई अरुभालमेंलालमहाउरदीनो ४७ ॥ परकी याखंडिता । सवैया ॥ भोरहीभावतोआनिकह्योतियगैल कैनैननकियेसकुचौंहैं । लाललिलारललाकोलखेगयेले।

१ पूछयोताहि

चनकैलललनाकेललोहें । डोरनहींबिनुहाराहियेलखिद्रती कीओरतकैसतरोहें । पांइअंगठेखरीक्षितिलोलतिबो लतिहैनचितौतितिहैसोहें ४८ ॥ सामान्याखंडिता । सवैया॥ ठाढ़ेउरोजमड़ेउरगाढ़ेउनींदेलगैंहगदोऊसुहाये । भाल मेंलाल नकीरदईअरुअंजनओठदैकाहूरिझाये । काहू केभौनतेआवतभोरसखातिऊऐसेहिभांतिसींभाये। लेहीं उतारिहूराहियसोंहमआजुकनावड़ेकैपियपाये ४९ ॥ अथकलहंतरितालक्षण । दोहा ॥ करिपियकोअपमानजो फिरिपाछेपछिताय ॥ कलहंतरितानायकाताहिकहत कविराय ६४ याकेकहेसुभाययेदीहउसासप्रलाप ॥ऐसे औरौजानियेभ्रांतिमोहसंताप ६५ ॥ मुग्धाकलहंतरिता। सवैया ॥ तोसोंकह्योतबनाहकीओरसुहेरियेतेरेहहाहरि खातुहै । आंखिनओटिलहोतहीपेक्षणमेंपुनिओरकछू नसोहातुहै । पांयनप्राणपियारोपरेतबपैकछुएंठिजुदी होइजातुहै । तोहिंपरीयहबानिकहाक्षणहीरिसऔक्षण हीपछितातुहै ५० । मध्याकलहंतरिता । सवैया ॥ पायँपलो टिकैनीबीगहीनोऊतासोंकरीरसमैंरिसरातिहै । भोरलौं ताहुनिहारिरह्योसुगयोजबजानीकछूनबसातिहै । रूठि कैपीठिदैबैठिरहीतबतोअबलालनकोललचातिहै । भे दयहैसजनीसोंकछू मिसुकैकह्योचाहतिहैपैलजाति है ५१ । प्रौढाकलहंतरिता । सवैया॥ कासोंकहौंकहाकैसी करूंअबक्योंनिबहैयहठाटजुठायो । पांयनप्यारोपरोई रह्योमेंअयानतेआदरकैनउठायो । झूठियेबातनतासे गरीमनमेरोभुराइकैमोहिंभुठायो । रूठिहांजानोंकहा

१ मैं पहिलेकहतरही जोपिया ऐसोनहीं सोबातहि भूठीबात करिरभुठाई ॥

इनदारीसहेलिनसीखदैमोहिंरुठायो ५२ ॥ परकीयाकल
हंतरिता । सवैया॥ जाकेलियेजगसोंभयोबैरभलीनमैंकाहू
कहूँनकहीहौं ।ठानिअठानजिठानिनसोंनितजाहिनिहा
रिवेकोउमहीहौं । जाकेसुधाहुतेसुन्दरबैनसुनेबिनमैंन
केदाहदहीहौं। कौनसयानकहौंअपनेसखिताहूसोंआजु
मैंरूसिरहीहौं५३॥ सामान्याकलहंतरिता । सवैया ॥ चाहि
कैंमेरेइगातसलोनेजोसोनेकोआदरनेकुनमानै । जोप
हिराइहराफिरिपीछेभुजानकीमालगरेगाहिआनै । मेरे
इओठकोरंगलखैजोनविद्रुमलालकछूकरिजानै । बूझि
येतेहिंरेबावरेजीवजुऐसेउपीउसोंरूसनठानै ५४ ॥
अथविप्रलब्धालक्षण । दोहा॥ लखिसूनोसंकेतजोपियबिन
अतिअकुलाइ ॥ ताहिविप्रलब्धाकहैंसुकविनकेसमु
दाइ ६६· ऊंचीसांसउसासज्यों चिंताअतिहीमानि ॥
दूतिहिंदेइउराहनोऔरमूर्च्छावानि ६७॥ मुग्धाविप्रलब्धा
यथा।सवैया॥ दूतिहुसोंबतरातिलजातिहैंजातिहैंमैनकेदा
गदगीसी । आवतज्योंकछुबूड़तसोहदछोड़िकैप्रेमनदी
उमगीसी । योंबिनदेखगयोमुखसूखिसरोजमेंजोन्हकी
झारलगीसी । गाढ़ीविथाहियबाढ़ीबिसूरतिठाढ़ीसहे
टकीठौरठगीसी ५५॥मध्याविप्रलब्धा । कवित्त ॥ प्यारेपै
गईहीपियासूनोलखिसंकेतलखि हियेमीनकेतुकीविकटवि
थाबाढ़ीहै । जाहीजोन्हजातकैजियाईहीयतनकरि
वाहीजोन्हअबदेहनखशिखडाढ़ीहै । दियोचहैंदूती
कोउराहनोबनाइपै नकछुकहिसकातिसकोचगहिगाढ़ी
है। पियबिनदेखेपीरीपरिआईमुखलोनेसोनेकैसीबेलिके

लिकाननमेंठाढ़ीहैं ५६ ॥ प्रौढ़ाविप्रलब्धा । सवैया ॥ कासों रिसाइकहैपुनि कासोंकछुबैन जानतिठौरकुठौरै। आगेहैं दूतीपैदेखिनजाहिं कोजानैधौंजायाकितैचितदौरै । सू नेसँकेतखरीअबलेंगाहि चन्दमयूषपहुत्योंभकभोरै । भू लिगईसुधिऐसीकछू जुकहयोचहैं औरैकहैंकछुऔरै ५७ विप्रलब्धापरकीया । सवैया ॥ आईहैलोगनत्स्वाङ्गसबैघर के सुमुखीअतिहीअनुरागैं । सूनोसोंह्वैगयोगातसबै व हसूनोसँकेतलहयोजबआगैं । दूतीसोंबादतिबारहिंबा र शृंगारअँगारह्वैदेहसेदागैं । जोन्हलगैअबपावकपुं ज औकुञ्जकेफूलफुलिंगज्योंलागैं ५८ ॥ सामान्या विप्रलब्धा । कवित्त ॥ फुरसतिमानिबालललालनपैआईहु ती लालनकीमालमुकतानकेसनेहते । ह्यांनिहारिसूनो धामबारबामहियेधामशोचकीअगिनित्योंहीं दहकिउठी देहते । कोहकरिबारबारदूतीसोंकहातिइहैबड़ीबड़ीअँखी येतिरीछीकरितेहते । जौलोंदुखदाईमोहिंल्याईहयाभुरा इतौंलौंफिरिगयेह्वैहैंकैयोदानीमेरेगेहते ५९ ॥ अथउत्काल क्षण । दोहा ॥ मुखपीरीहियशोचमय पुनिअँगरानिजँभा नि ॥ दशाआपनीकोकथन येसुभायसबजानि ६० का. हेतेआयोनहीं प्योंसहेटकेधाम ॥ हेतुविचारैजोहिये सो ईउत्काबाम ६१ ॥ मुग्धाउत्कायथा । सवैया ॥ लाजतेबू भिसखीहुसकैन विचारतिसीकछुयेईविचारहै । कैतोरि भाइलियोकहुँकाहू खिभायोकितोअतिहीसुकुमारहै । रे मनतूतोरहेपियपासकहैकिनकाहेतेकीन्हींअबारहै । प्या रीह्वैपीरीगईयहिशोचमनोपतिभारलवंगकीडारहै ६०

१ कोउ सों सभेन ।

मध्याउत्कायथा । सवैया ॥ बीनमेंकोऊप्रवीनामिली
तिय केतोमिल्योकविराजसमाजहै । काहूकीचातुरीमें
चितलाग्यो किधौंउरझेकहूँकाहूकेकाजहै । जानकहौं
तौरह्योनपरै जुकहौंतोकहैपरआवतिलाजहै । आइबे
कोयहिऔरधौंकाहेते आजुअबारकरीब्रजराजहै ६१
उत्काप्रौढ़ा । सवैया ॥ ख्यालनमेंनकह्योकबहूंकछु भायहु
भूलिनभौंहचढ़ाई । देख्योविचारिविचारिमेंआपनी चूकनकौनौकहूँमनआई । गाढ़ीगहीअँगियातबनैसुकहा
थनिरोकिभईरिसहाई । याहीतेआजुधौंआइबेको कहुँ
नन्दकुमारअबारलगाई६२॥ उत्कापरकीयायथा । सवैया॥
ठानेअठानजिठानिनहूँ सबलोगनहूँअकलङ्कलगाये ।
सासुलरीगहिगांसुखरी ननदीनकेबोलनजातगनाये ।
एतीसहीजिनकेलियेमेंसखि तेंकहिकौनेकहांबिलमाये ।
आयेगरेलगिप्राणपैकैसेहू कान्हरआजुअजोंनहिंआये
६३॥ उत्कासामान्या । सवैया ॥हेरखजामेंरखाइकोऐसो
तोमैंनकियोकबहूँपरिहासहै । पायबिनामनकियोकबहूँ
परिहासहैपायबिनामनिमाहै । जानतिहौंरिझवारबड़ो
सोबँध्योकहूँऔरवधूकेविलासहै । येरीकहैबिनपीतम
आजुहीं काहेतेआइबेमेंधौंउदासहै ६४ ॥ अथवासकश
य्या । दोहा ॥ निश्चयमेरीसेजमें पीउआइहैंआजु ॥ वा
सकशाय्यासोजुथोंसजैसुरतकोसाजु ७० हियेहासपरि
हाससखिदूतीप्रश्नबताइ ॥ ह्वारिदृगनदबीकहे याके
सबैसुभाइ ७१ ॥ मुग्धावासकशय्या । सवैया ॥ फूलसीआ
पुहीआपनेहाथनि फूलकेगूँथतिहारनवीने । आपुहीआ

पुनेहाथदुकूलकियोचहै केसरिकेरँगभीने ।भेदकहैनस खीनहुसों हरषैहियमेंपियआइओकीने । प्यारीकछूमि सुकेमगुदेखति द्वारकीदेहरीमेंदृगदीने ६५ ॥ मध्यावास कसय्या यथा। सवैया ॥ द्वारोइदेखतिद्योसहितेहियमेंक रिलालनकोललचातिहै । मारिकैमारसुमारकरी अब लौंअवतोयहआवतिरातिहै।फूलनिसाजातिसेजसुहागि नि भावतीहासहियेसरसातिहै । बैठीश्रृंगारश्रृंगाररतिपे लखिलोगनलाजनहींगड़िजातिहै ६६ ॥ प्रगल्भावास कशय्या ।सवैया ॥ सेजसजीऔश्रृंगारसजे रचिकैरतिके लिकोमंदिरनीको । आयोहियेबढ़िचौगुनोचाउल्योंभा उभयोसबजाहिरजीको । आननआनिधरयोकरऊपर कौलमेंमंडलमानोशशीको । द्वारकीओरदियेदृगदोऊ निहारतिप्यारीपियामगुपीको ६७ ॥ वासकशय्याप्रकी या। सवैया ॥ ऐसीकहानीबड़ीकछुठानीजोनंदजिठामी कोजागिबोमेटति।ऊतरुकैअंचराइदियातनहूँमृगनाभि कीधूरिधुरेटति। खोलिकैघूंघुरुपांइनतेरसनाउकहूँगहि दूरिलपेटति । सांवरोआयोयहैजियजानिअंभ्यारीको प्यारीभुजाभरिभेंटति ६८ ॥ सामान्यावासकशय्या । सवै या ॥ साजिश्रृंगारसखीसोंकहैकिहोंदेखतलालकोज्यो ललचैहौं।सेजमेंजोकरिपायहौंनेकुतहांपुनिभांतिअने करिभैहौं । आपनेप्राणपियारेकोऔजुहौंकेसहूँजोइहि ठौरकैपैहौं । डारिभुजानकीमालगरेमुकतानिकीमालउ तारिहौंलैहौं ६९ ॥ अथस्वाधीनपतिकालक्षण । दोहा ॥ से वकज्योंनितप्रतिरहैप्रतिजाकेआधीन ॥ स्वाधिनपति

कानायकाताहिकहतपरवीन ७२ पतिहितकथनसखी नप्रतिसाभिम्यानजियजानि ॥ हौंअविकीसनतेसुयों तिहिसुभावमनआनि ७३ ॥ मुग्धास्वाधीनपतिका।कवित्त॥ लाखमीठेहोउऔरमीठोनलगतकछुऐसोतेरोअधर मधुररसचास्योहे । लालललचौहेंलखिवोहीकरेंतोहींतनलाखनमेंऔरुलखिवोनअभिलास्योहे । कहांकोऊ पावैयहचलनिचितौनिऐंठीसुधाकोसवादुतामेंजोईकछु भास्योहे । एरीप्राणप्यारीवारोंऔरकोसयानतेंअयान हीसोंपीतममुठीमेंकरिराख्योहे ७० ॥ मध्यास्वाधीनपतिका । सवैया ॥ फूलनिवेनीवनाइगुहीतुमताकोनकोऊकहूँ कछुकेहे । आपनेहाथहरापहिरायोसुतोयहसोहिरह्यो हियमेंहे । लालनमोपैरह्योपरिहेंकतजोअबकोऊलखी इतऐहै । कोठिकरोतुसहाथतिहारेतोजावकमोपैदिवायो नजैहै७१ ॥ प्रगल्भास्वाधीनपतिका । सवैया ॥ शीशसुधारि धरैशिरफूलसुतोसरसैरविकीछविजीतै । आपुहिदेतम हाउरपांइनलाजतेहोतकछूनसभीतै । देख्योतवैदिगवै ठ्योरहैसपनेहुँनऔरतियाचितचीतै । प्यारेकोप्यारीति याकेशृंगारशृंगारतईसिगरोदिनवीतै ७२ ॥ परकीयास्वाधीनपतिका । सवैया॥गेहमेंसुन्दरिसोंकहैंपेमतिलालनकी नकहूँललचातिहै । औरसुनेसमुझैनकछूनिशिवासर मेरीयेवातसुहातिहैं । घरतहैंघरमेरोइआनिकहाकहों मैंनकछूकहिजातिहै । पीठिदैबैठोंजऊमिसुकैपियडीठि तऊइतईठहरातिहै७३॥ सामान्यास्वाधीनपतिका।सवैया॥ केतियोसुंदरिहैंपीकियोशिरमेरेइसुंदरताईकोनेनुहै । के

तेनयेखसखानेिनैंयेहैंपैमेरोईलागतुनीकोनिकेतुहै ।के
तियोंभौनमेंभावतीहैंपैकियोमनभावनमोहिंसोहेतुहै ।हैं
धनगाहकताकेकरोरिपैजोरिधर्योधनमोहिंकोदेतुहै ७४
यथाऽभिसारिकालक्षण। दोहा ॥ कैतीआपुहिजाइकै पिय
हिंपठावैबोलि ॥ सोसुकबिनअभिसारिका बरणीहिर
देखोलि ७४ भूषणसमयसमीनसब हियेबुद्धिअरुभी
ति ॥ चतुराईसाहसकपट यहसबयाकीरीति ७५ यहै
सुकीयाहोइजब तबकेयेनसुभाव ॥ बातयहैनिश्चयकहैं
सुकबिनकेसमुदाइ ७६ ॥ मुग्धाऽभिसारिका। सवैया ॥
हैरजनीसजनीयहदामिनि दूतीसँदेशकहैबहुतेरे ।बा
नकमानलियेसँगमैन कियेमगुश्यामघटानअँधेरे ।
जानतिहौंसुघरीयहहै सुपुकारतज्योतिषीचातिकयेरे ।
ठीलकहापियपैअपनेसँगमोहूंलियेचलरेमनमेरे ७५ ॥
मध्याऽभिसारिकायथा। सवैया ॥ हाथगुहैंज्योंचुरीखन
कै बिछियानबजैंगहिराखतिपाइहै । दांतनदाबिरहै
रसनां रसनाकेबजेअतिजातिलजाइहै । कोऊकहूं
गुरुलोमजगैं जनिचौंकिरहीहियमेंडहेआइहै । योंस
बसातिगईतबजाइ पियापहुँचीपियपासबराइहै ७६ ॥
प्रौढाऽभिसारिका। सवैया ॥ कण्ठमेंलालकीमालबनी
पहुँचीनझबाझलकैमखतूली । योंकछुअंगनिमेंउम
गीछबि देखतहीरतिकीमतिभूली ॥ मन्दगयन्दकीचा
लचलै लटएककुटीमुंहऊपरझूली । आइगईपियपास
पियाघर केलिकेकुन्दकीबेलिसीफूली ७७॥ परकीयाऽ
भिसारिका। सवैया ॥ माइकेतेनपरोसिनिआई औकाहू

कोहैघरऔरननेरे । ज्योंतुवन्योसवयोंलखिकै तेउठाइ
दईजेसखीहुतींघेरे । दूरिकैघूंघुरूऔबिछिया खिरकी
खुलीराखीहैकौनेहुफेरे । दूतीलियेपियपासपठैगइप्या
री परोसीकेधाम अँधेरे ७८ ॥सामान्याऽभिसारिका । कवित्त॥
बड़ेबड़ेनैनबड़ेबड़ेबारअतिनीकेनखतसेबड़ेबड़मोतीन
थनीकेहैं।गूजरीजराउजगिमगिपगिरही औअधरआगे
जपाहूकेलगेफूलफीकेहैं । छबिसोंछबीलीचलीछैलछबी
लेकेपास मनोरथयेईहमजानेयाकेजीकेहैं। आजुभुजमा
ललालगरेपहिराइबह लेहैलालमालजामेंसमूहसीरीके
हैं ७९ ॥ दिवाऽभिसारिका । सवैया ॥ बोलनआवोंतोहैन
भलीअब आयेखिझाईगईबहुतेहों । दारीसहेलीजेसी
खदैमोहिं घोसहिल्याईतिन्हेंसमुझैहों । रातिकोऐहों
तिहारीसोंजो कहोगेसोमानुकह्योसबलेहों । हाहारहो
अँचरानगहोछिनकैतोमैंदेहनदेखनदैहों ८० ॥ कृष्णाऽ
भिसारिकायथा । कबित्त ॥ श्यामघनघटनकरीहैनिशाश्या
मतामें श्यामअङ्गरागलायशोभाभरछईहो । श्यामेंकर
फलश्यामपहिरेदुकूलश्याम भुजमूलगहिकैभुजानभरि
लईहो । मरकतहीकोकियोगेहनोहैश्यामविधि मरकत
मणिहीसोंमानोंनिरमईहो । अबलोंतोश्यामातुमझूठे
हीकहावतीही श्यामहीपैआईआजुसांचीश्यामाभई
हो ८१ ॥ चन्द्राभिसारिकायथा । सवैया ॥ जोहैजहांमगु
नन्दकुमार तहांचलीचन्दमुखीसुकुमारहै । मोतिनही
कोकियेगहनो सबफूलरहीमनोकुन्दकीडारहै । भीतर
हीजोलिखीसोलिखी अबबाहिरजाहिरहोतिनदारहै ।

जोन्हसीजोन्हैंगईमिलियों ।मिलिजाातज्योंदूधेमदूध कीधारहै ८२ ॥ अथप्रवत्स्यतपतिकालक्षण । दोहा ॥ पिउ जाकोपरदेशकोचल्योचहतक्षणमांह ॥ ताहिप्रवत्स्यत भर्तृका कहिबरणतकबिनाह ७७ हियब्याकुलमुखपी तता चतुराईकेकाज ॥ बिवरणआदिसुभायसब बरणे हैंकबिराज ७८ ॥ मुग्धाप्रवत्स्यतपतिका । सवैया ॥ चोपभ ईदिनचारिहितेलगेलागनपीकेबिलाससुधासे । ऐसेहि मेंचलिबेकोबिदेश कहूँमुंहतेपियबैननिकासे । चन्द्रमु खीसुनिकैबिलखीउलहेबिरहानलकेअँकुरासे । आँसू गिरेदृगकोरनते भुवमोरनकेमुंहतेमुकुतासे ८३ ॥ मध्या प्रवत्स्यतपतिका । सवैया ॥ सुखेअजौनतेऔधिकेद्योसग नेजेपरेअँगुरीनमेंछाले । मैनकेबाणनकेअतिगाढ़ेबने घनेघायअजौंउरआले । आयेसुनेकिसुन्योचलिबो सु हियेलगिदूरिकियेनकसाले । आंखैलजीलीकैयोंकहि राधिका राखतिगोकुलचन्द्रकेचाले ८४ ॥ प्रौढ़ाप्रवत्स्य तपतिका । सवैया ॥ ज्वालतेजोरजोन्हाईकेझारिहैंचारों दिशाविषसोंबरसैहैं । देखतहीदृगदेहैंअचानकआंच तेकोटिकनाचनचैहैं । मोमुंहकीकबहूंतुमसों समताईन पाइरह्योरिसकैहैं । प्राणपियारेतिहारेचलेअबहींयहच न्द्रजवालजरैहैं ८५ ॥ परकीयाप्रवत्स्यतपतिका । सवैया ॥ बातबिठोककीटेरिकहैकहूँ मागरिकैछीलैआनिदिखवैं। सुनोकैपायतौआपुहिरोकिकै आजुरहोकहियोंललचा वैं । झाँकिझरोखेअजानसीह्वैकै बिछोहकेपीरकेगीतन गावैं । प्रियपरदेशकोचाहैंचल्यो पैपरोसिनिसोंकहूँजान

---

१ चौदे २ घालियो ३ मुखअधिक करयों ॥

नपावै८६॥सामान्याप्रवत्स्यतपतिका । सवैया॥ परदेशतुम्हैं चलिबोअवहीं बिरहागिनिजागीहमारेहिये । कहोक्यों हमसोंरहिजैहैबिना इनआंखिनरावरोरूपपिये । कितो हीरनहीकोहरासुखपैहोंकितोमुकुतानकीमालदिये । पियदीजियेऐसीनिशानीकछू जोतिहारेबिछोहमेंजोहिजिये ८७॥ अथोत्तमादिलक्षणं । दोहा ॥ बहुरिउत्तमामध्यमा अधमायेऊतीन ॥ सबसुकियनकेभेदहैं भाषेसुकबिप्रवीन ७९ ॥ अथोत्तमा । दोहा ॥ पीउकरैअनहिततऊ हितनतजैजोबाम ॥ ताहीसोंसबसुकबिमिलि कहतउत्तमानाम ८० ॥ यथा।सवैया ॥ पिउपरभातपधारयोतऊ कियोआदरप्यारीवड़ोअनुरागहै।पेचढिलोहैसेपेखिपिया पुनिआपुनेहाथदईचुनिपागहै। आंचरपोंछेकरोछेसे ओठअँगोछेतिलाललिलारकोदागहै । आपुहिहोतिनिछावरियों कहिआजुतुम्हैंयोंलखेबड़ोभागहै८८॥ अथमध्यमा।दोहा ॥ अनहितलखिअनहितकरै हितमेंराखैहेत ॥ताहिमध्यमानायका परकटहोंकहिदेत८१॥सवैया॥ औरकीऔरतकैजबप्यो तबत्योंरीचढ़ाइचढ़ाइरिसातिहै । मीठीसीबातेंसुनैहित कीतबहींलखिलालनकोललचातिहै । जोअपराधकोलेशलखैं तौंनकैसेहुरोषकी आगिबुझातिहै । पांयनप्यारोपरैजबहीं तबहींगुणगौरीगरेलगिजातिहै ८९॥ अथाधमा । दोहा ॥ पीउकरै अतिहिततऊ अनहिततजैनबाल ॥ तासोंअधमाकहतहैं पण्डितगुणीरसाल८२॥ यथा।सवैया॥ज्योंहींनचावै त्योंनाहनचै पैकियेईरहैनितनैननिचौंहैं । रूखीसीबैठ

---

१ दिये आलंबय: ॥ [illegible]

तपीठदैंदै कबहूंमुसुक्याइचितौतिनसोंहैं । प्यारोहहाक रिहारैकहूँ तवनेकबखाइतकैतिरछौंहैं। पिउमनहाथलि येइरहै पैतऊतियकीरहैंटेढ़ीयेभौंहैं ६० ॥ इतिनायकाप्रकर णं ॥ अथनायकलक्षणं । दोहा॥ सुन्दरसुघरसुहावनोगुणी कुलीननवीन ॥ गीतकवितज्ञातासरसकामकलानिप्र वीन ८३ ॥ यथा । सवैया ॥ शिरमोरपखानिछयेछविपुंज बिराजतगुंजकीमालगरें । मुखपूनोसुधानिधिहूँनगनै दृगनीलसरोजनहूँनिदरें । घनसैतनबीजुरीपीरोभँगाब गपांतिनज्योंमुकुताकीलरें । निकरैंहियतेनजुयाछविसों हरिश्रानिजबैइतकैनिकरें ६१॥अथनायकभेदकथनं । दोहा॥ पतिउपपतिवैशिकत्रिविधनायकजियमेंजानि ॥ बिधि सोंब्याह्योहोइजोपतिकरिताहिबखानि ८४ ॥ पतियथा। सवैया ॥ व्याहकेयोंसहितेदिनहूँदिनप्रेमदुहूँकेहियेसर सातहैं।गौनोभयोभयदोऊनिहालदुहूँकोदुहूँनकेबैनसुहा तहैं ।बैठकएकहिठौरकियेजुदुहूँकोदुहूँक्षणछोड़िनजातहैं। रात्यौंदिनादोउदेखेंदुहूँपैतऊनदुहूँनकेनैनअघातहैं ६२ दोहा ॥ सोपुनिचारिप्रकारपतिसुकविनकह्योबनाइ । पहिलेहीअनुकूलपुनिदक्षिणधृष्टगनाइ ८५ चौथोइन मेंशठकह्योंशठताईकोमूल ॥ परतरुणीतेबिमुखजोवाहि कहतअनुकूल ८६ ॥ अनुकूलयथा । सवैया ॥ नारिपराई तेबोलनकीकहाक्योंहूँनकाहूकोभूलिहुहेरे । मेरोलखै मनवेईश्रौमैंहूँलियोउनकोलिखिचित्रहियेरे । बांधिसकै उनकोमनकोबँध्योरैनादिनारहैमेरेइनेरे । लेशनहींउनमें अपराधकोमानकीहौंसैरहीउरमेरे ६३ ॥ दक्षिणलक्षणं ।

दोहा ॥ जोराखैसबतियनसोंसदाबराबरप्रीति ॥ दक्षिण नायकआहिवहयाकीहैयहरीति ८७ यथा । कवित्त ॥ एकै कहैंकान्हहमहीहैंयेकैकद्लींकिउनकीहमारीमिलिगईपर कीतिहै । एकैकहैंहमबिनकैसेधौंरहैहैंएकैकहतींकिहम बिनकैसेक्षणाबीतिहै । सबैएकनेरहीचितौतहोतींबशयह कछुचतुरनकीचितौनहीकीरीतिहै सोरहोंहजारगोपीआ पनेआपनेमनकहतींकिकान्हरसोंहमहींसोंप्रीतिहै८४ ॥ धृष्टलक्षण । दोहा ॥ निधरककरिअपराधजोतियरिसतेन डराइ ॥ लाजनजाकोताहिसबधृष्टकहतकबिराइ ८८ ॥ यथा । सवैया ॥ फाढ़िदियेघरतेतोघरीहीमेंपायँनदेखोपरे हहाखातहैं । फूलकीमालसोंबांधेतऊमुसुक्याइतकैतन कोंनसकातहैं । बातनतेडरपैयेकहाभकभोरतहूंनअरी अरसातहैं । लाजकोलेशनहींमनमेंनितमारेउजाततऊ नलजातहैं८५॥ शठलक्षण । दोहा ॥ जोहितकीबातैंकहै अनहितकरैनिदान ॥ निपटकपटकोरूपशठताहिकहत हैं जान ८६ ॥ यथा । सवैया ॥ औरनकेढिगतेनटरोनि तबातनहीहमैंराखतटारे । औरनकेसंगरातिवितादहमैं सुखदेतहोआनिसकारे । औरनसोंतुमसांचेइहौहमसों रहोभूँठेइव्योंतविचारे । लागतऔरनकीछतियांतुम पायँनलागतआनिहमारे ६६॥ अथोपपतिलक्षण । दोहा ॥ परतरुणीकोरसिकजो उपपातिकहियेताहि ॥ वैशिकवे श्याकोरसिकसुकबिनकह्योसराहि ६० चारिभांतिपुनि उपपस्योकबिजनकह्योबिचारि ॥ शठताईतहँनियतहै यहमननमेंनिरधारि ६१ ॥ उपपतियथा । सवैया ॥ लखि

पावैंकहूँतोकह्योइचहैंसबचैंमेहिमोहिंनकोउगने । घरकी घरहाईचवाइनियेकछुआनिहिंऔरकीऔरैमने । यहजै सोइतैसोसंवारिहौंलैहौंहरेहरेहाथहिसांअपने । तुमटी कोवनावनआवतहोकहूँदेखैजोकोऊतोकैसीवने ९७ ॥ अंन्यवृत्ताहरणानिपूर्ववत् अथवैशिकोदाहरणं । सवैया ॥ भोर भयोभरमेंमदअंधसुगंधझकोरनकीझकझोरमें । मानों सुधाकेसमुद्रपर्‍यो अंकवारिसमेंसिसिकीनकेशोरमें । भू लिरह्योलखिभौंहकेभाइरह्योठहराइउरोजकेठोरमें।वार वधूकेविलासनैंबंध्योसुकहोमनकैसेलगैतियओरमें ९८॥ दोहा॥उत्तममध्यमअधमपुनिवैशिकतीनप्रकार ॥ग्रंथन केमततेकहैं सबैसुकविसरदार ९२ ॥ अथोत्तमवैशिकः । दोहा ॥ तियहिरुखोहैंदेखिजो बहुतकरैउपचार ॥ उत्त मवैशिकआहिवह सुकविनकियोविचार ९३ यथा।सवैया॥ कवहूंशिरआइदैकेसरकी अँगियामृगके मदसोंचुपरै । कवहूंकरैहीरनहीकेहराकवहूंमुकतानसोंमांगभरै । कव हूंपुनिसोनेसीआंगुरीकेढिग सोनेकेभूषणआनिधरै । तियदेखिरुखोहींसनेहसोंपिउ इहिभांतिमनैवेकेज्योंतक रै ९९॥ अथ मध्यमवैशिकः । दोहा ॥ तियकेरूसेरोपर स जोनप्रकटकरिदेइ ॥ मध्यमवैशिकसोजुवह चुपकै समयबितेइ ९४ यथा। सवैया ॥ आपुइवारहराउरझाइ कै आपुनहीसिसकेसुरझाचे । आपुहिवेसरफेरतिआ पुही जातिनईअरुहाथनचावै । प्यारोमिहारोकरैढिग ई कछुआपनोरोपरसौंनजनावै । पायेविनामणिमाल रिसानीयोंवालतमाशेअनेकदिखावै १००॥ अथाऽधमवै

१ घरवाली ॥

शिकः । दोहा ॥ जाकेजियरतिकेलिमें डरअरुदयानला
ज ॥ ताकोंवैशिकअधमयों कहतसबैकबिराज ६५ ॥
यथा॥सवैया ॥ जियजाकेनलाजदयानकहूं डरकाहूकोछ्
वैनगयोअँगमें। कछुआपहूवभ्भतहैनकोऊ औसिखावन
हारनहींसँगमें । ढिगऐसेकेमोहिंपठावतीहो तूजिया
योनचाहतिहोजगमें । तोकहाफलफूलीचँबेलीजोवां-
धियेमतिमतगजकेपगमें १॥ अन्यभेदाः ।दोहा ॥मानीऔ
रक्रियाचतुर वचनचतुरपुनिजानि ॥ येऊतीनप्रकारके
नायककहेबखानि ६६ मानीकोऔचतुरकोशठसेंअन्त
रभाव॥रसग्रंथनकोमतकहतसुकविनकोसमुदाव ६७
तेषांस्वरूपज्ञानार्थंलक्षणंतत्रमानी। दोहा॥करिअपराधजुतरु
णिसोंआपहिठानैमान ॥मतोकविनकोजानिकैमानीता
हिबखान ६८॥ यथा॥सवैया ॥ सांभ्भगयेउठिआवतभोर
होजानतिहोंतुमहूंभयेभानहो ।जाहिबिथासुकहयोईच
हैतुमदेतनहींइनबातनकानहो । रूठिकैपीठिदैबैठिरहे
हियमेरेजगावतकोपकृशानहो । चाहियेवाहिकिमानक
रैउलटेतुमहींअबठानतमानहो २॥ वाक्चतुर क्रियाचतुर
लक्षणं।दोहा ॥ वचननकरैजुचातुरी बचनचतुरवहआ
हि ॥ करैक्रियाकीचतुरई क्रियाचतुरकहिताहि ६९ ॥
वचनचतुर यथा॥सवैया ॥ उठिभोरहीआवतीहौतितकेजि
तघोसहुमैतमञ्जाहरह्यो । सँगकाहूतोलेहुलगाइअहो
कहियेकहामानतीहौनकह्यो । कहोकोसुनिलेहैपुकारि
बोकाहूअचानकजोठगआइगह्यो । तुमसूनेतमाल
कीकुंजकीगैल अकेलिहिबेचनजातिदह्यो ३ ॥ क्रिया

चतुरयथा । सवैया ॥ होरीकेऔसरगोरीसबैमिलि दौरी
लख्योजव्र कान्हरआयो । ह्यांइनमेंनिजभावतीदेखि
भयोमनभावनकोमनभायो । हाथपसारयोंनसुभिप
रैतहैयोंकुछलालगुलालउड़ायो । बाहनबांधिहियेलागि
केहरिराधिकाकेमुँहसोंमुँहछुवायो ४ ॥ दोहा ॥ पतिउ
पपतिअरुवैशिकायेऊप्रोषितहोत ॥ रसग्रंथनकीरीति
लखिकहतकविनकेगीत १००॥प्रोषितलक्षण । दोहा॥ जो
बिदेशमेंबिरहते अतिहीव्याकुलहोइ ॥ प्रोषितता
सोंकहतहैं कविपंडितसबकोइ १ ॥ प्रोषितपतियथा ।
कवित्त ॥ पुहुपकीपांखुरीउपटिउठैं जाकेतनसोधौंकैसे
कामशरसारसहिरहैगी॥नेकऊंचेबोलतअचानकहीचौं
कतिहीमोरशोरसुनिकेधौंकैसेमिरबहैगी । लाग्योईर
हतनितानितचितयहैशोच मेरेमेघनकीधुनिसुनिसाह
सक्योंगहैगी । आंचरसोंदियोअचराइसकैजोनसो
धौंकैसेबिरहानलकीआंचउरसहैगी ५ ॥ प्रोषितोपप
तियथा । सवैया ॥ जैहैंघरैहमहूंकबधौं सुपरोसिनिवैसेहि
आनिजियैहै । नाहहिऔरबधूवशदेखि हमेंलखि
द्योसहितेंललचैहै । लोगजहींसबसोइहैंनेकसोछेटोक
हूँक्षणएकजुपैहै । तोतबचोरलौंचापातिपायँ हरेहरेआ
यगरेलगिजैहै ६ ॥ प्रोषितवैशिकयथा । सवैया ॥ मांग
हैमोतीदियेपरहाथकी लालीतेबिद्रुमजानिरिसैहै । ही
राकेहारहियेपहिरैहौंतोसोनेकेजानिकैनैननचैहै । आ
पुहिगाढ़ेगरेगहिहै सिसिकीनकेआपुहिशोरमचैहै । प्रा
णपियाऔँखियानकेआगेजियायबेकोअबधौंकबऐहै७॥

१ पल्य ॥

धनूभनायकलक्षणं । दोहा ॥ नायकहैजु अनूभवह
आहिनायकाभास ॥ तासोंचतुररतियानिसोंकैसेआवे
रास २ ॥ यथा सवैया ॥ सूनेअटाचढ़िदेहदिखाइके
सेजमेंपौढ़िरहेपटताने । झांकिझरोखेउठैअँगिराइ
जम्हाइकितेकोवतावतिसाने । कोऊसखीढिगजाइतो
ताहिपठावतिफेरिनभेदवखाने । चन्द्रमुखीकरैचातुरी
केतियो पैवहमूरखनेकनजाने ८ ॥ दोहा ॥ यहिविधि
ये नायकसबै सुकविभकहेवखानि ॥ नरमसचिवतिन
केकहत अबयेचारोंजानि ३ पीठमर्दविटचेटपुनि
औरविदूषकआहि ॥ हरैजोतियकोरूठिबो पीठमर्दक
हिताहि ४ ॥ पीठमर्दयथा।सवैया ॥ मेघकहाबिनबीजु
रीको बिनदीपतिदीपउलागतफीको । फीकोईफूलसु
वासबिना बिनचांदनीकौनस्वरूपशशीको। हैंतोसखाउ
नकेहमपै भलोचाहतएकतिहारेइजीको । रूठिबोछोडि
हियेलगियेन लगैनँदनन्दतुम्हेंबिननीको ९ ॥ विटचे
टलक्षण । दोहा ॥ कामकलाअतिचतुरजो विटकहियतहै
ताहि ॥ हैजुमनैबेमेंचतुर प्रकटचेटसोआहि ५ ॥
विटयथा । सवैया ॥ मालिकोमंदिरनीकोआयोहियेबढ़ि
चौगुनअयानपगी । जबहींलियोचाहेभुजाभरिकै तब
हींफिरिभौनकोजातिभगी । विटऐसेमेंकोकिलाकूकत
ही सुनिकामकलाजियआनिजगी । जहँमानतिही
नमनाइथकेतहँ आपुहितेफिरिकंठलगी १० ॥ चेटकयथा ।
सवैया ॥ क्योंहूँनहेरतिहीहरिओरसखीनिमैंकोनहहाक
रिहाख्यो । रूखीरहैनिशिवासरहूसबकामकलाकोविला

१ क्रीडाके सखा २ संभोगकराएवेकी कला ३ रूसाको ॥

सविसाख्यो। आजुधौंकैसीभईयहआपुनैबूमिकछूसबरो षनिवाख्यो। केलिकेकुंजमिलायदईकछुचेटकचेटकसो पढ़िडारयो ११॥ विदूषकलक्षण। दोहा॥ कछुकस्वांग करिकैजुकछुहांसीठानैआनिताहिविदूषककहतहैंसिगरे सुकबिबखानि ६॥ यथा। सवैया॥ राधिकेदेखिअके लीविदूषक ल्यायोकछूकहिकान्हरैटेरत। केलिकेकुंज मेंजायदोऊ कोमिलायदयेइतहूंउतहेरत। फूलनहीके बिछावनेकैरतिमें जबजान्योकिदोऊभयेरत। नन्दको स्वांगकियेतवहीं ढिगआयकह्योउहैगैयनघेरत १२ अथदर्शन। दोहा॥ दर्शनतीनप्रकारके स्वप्नाचित्रसाक्षा त॥ तेहैंकहतवनाइकै जिनकीमतिअवदात ७॥ स्वप्न दर्शन यथा। सवैया॥ औचकआनिगह्योअँचरात्यों नहीं नैनजीभुलगीजपनेमें। हाथनसोंझिझकारोकियो परी होंकछुऐसीअयानपनेमें। वेतोकितोनकियोअनुराग अभागकहांलोंकहोंअपनेमें। जाहिबखानिबोईकरती वह सांवरोमोहिंमिल्योसपनेमें १३॥ चित्रदर्शनयथा। स वैया॥ सांवरेअंगनमेंनखते शिखलोंसुखमाकेसमूह सनेहैं। याहीविसासिनिबांसुरीमेंवश कीबेकेव्योंतनजा तगनेहैं। येईवडेदृगहैंजिनगोपवधू उरघायलकीन्हेंघ नेहैं। वाकेहौंजैसे कछूसुनिराखेहे चित्रमेंवेईचरित्रबनेहैं १४॥ साक्षातदर्शनयथा। सवैया॥ होंलखौंएकईटकज्योंज्यों त्योंत्योंलखिबेईकीहोंसहियेउलहे। यहरूपकीराशिनि हारेकह्योकुलकोव्रतकाहूकोकैसेरहे। करआपनेजोकबहूं यहभूले हूँफूलकेवानकवानगहे। किरपारतिपैकरिदी

न्हीमहेश मनोजवहैयहकौनकहै १५॥ अथसखीभेदाः।
दोहा॥ जासोंजियकीबाततिय राखैकछुनदुराय॥ ता
सोंकहतसखीसबै सुकबिनकेसमुदाय ८ चारिकाज
येसखिनके परकटप्यारीपास॥ उपालम्भमण्डनबहुरि
शिक्षाअरुपरिहास ९ सखीजुदेइउराहनो कैप्यारी
कीओर॥ उपालम्भतासोंकहत सबैसुकविशिरमौर १०
यथा सवैया॥ योंकछुकीनीअचानकचोट जोओटसखी
केसकीनदुकूलहै। देहकँपैमुहँपीरीपरी सुकह्योनहिंजो
कैगयोशूलहै। मांझउरोजमेंआनिलग्यो अँगिरातिज
हींउचक्योभुजमूलहै। कौनहैख्यालखेलारअमोले नि
शङ्ककैऐसेचलैयतफूलहै १६॥ मण्डनलक्षण। दोहा॥
सखीपियापरप्यारकरि करैजुआपुशृँगार॥ तासोंमण्ड
नकहतहैं सुकबिनकेसरदार ११॥ यथा सवैया॥ सौं
धोलगैयेकहासबये तोसुभायईअंगसुबाससनेहैं। पा
यँनमेंजेसुभायनहैं रंगजावकमैंधोंकहांइतनेहैं। नैनसु
भायनहींकिजरारेकरीहमकाजरदेतमनेहैं। कौनशृँगारिये
अंगशृँङ्गारतोआपुहितेअनयासबनेहैं १७॥ शिक्षालक्षणं।
दोहा॥ नीकीसीखपियाहिजो सखीदेइसुखपाइ॥ शि
क्षातासोंकहतहैं सुकबिनकेसमुदाइ १२॥ यथा सवैया॥
देयाकन्हैयाबिनाक्योंबनैऽवजोन्हैया जगावतिकामकृ
शानुहै। औरकहांलोंकहोंउलटोयह जेठकोभानुभयो
सितभानुहै। मीठीमहाहितआपनेकी सिखसोईपैजानि
हैजोकोऊ सुजानुहै। ज्योंनरहैबिनजोहैजिन्हें तिनसोंकहूं
बावरीकीजतुमानुहै १८॥ परिहासलक्षण। दोहा॥ स

१ सुगंध २ बिश॥

खीपियासोंप्रेमते करैजुहासविलास ॥ ताहीसोंसबकह
तहैं कबिकोविदपरिहास १३ ॥ यथा सवैया ॥ मोरपखा
नकोमौरधरयोशिर ओढ़िलियोपटपीतनवीनो । कान्ह
ह्वकोकरिस्वांगसखी परिहासयोंप्राणपियारीसोंकीनो ।
गाढ़ेगहेकुचदोउअचानक दूरिकियोउरतेपटभीनो ।
सीवीकैभावसोंभौंहेंचढ़ाइ भलेजुभलेकहिकेहँसिदीनो
१६ ॥ अथदूतीभेदानाह । दोहा ॥ दूतपनेमेंनिपुणजो दू
तीकहियेताहि ॥ उत्तममध्यमअधमवे तीनिभांतिकी
आहि १४ मीठेमीठेबैनकहि मनहरिलेतिजोआइ ॥
उत्तमदूतीकहतहैं ताहिसुकबिसमुदाइ १५ ॥ उत्तमदू
तीयथा । सवैया ॥ शशिसोमुखरावरोदेखतही उरप्रीति
पयोनिधिलौंउमगी । अबकाहूकीबातसुनैसमुझैनरही
ठगिसीठगमानोठगी । वहबाततिहारीयेबूझ्योकरै क
छुऐसीतिहारेइप्रेमपगी । हियेरावरीसूरतिऐसीलगी
जोरहैनितठाढ़ीकेवारलगी २० ॥ मध्यमदूतीलक्षण ।
दोहा ॥ कछुहितकछुअनहितबचन कहैआइजोबाम ॥
तासोंसबकबिकहततहैं मध्यमदूतीनाम १६ ॥यथासवैया॥
आयेहोडीठिलगाइकैवाहि कहोयेसयानपसीखेकितैहो ।
देखनपैहौनजीवंतजाइ जोएकौघरीकहुँबीचवितैहो ।
ज्यायेपैएकातिहारेहीजीहै कोजानैधौंबेरीभयेकिहितैहो ।
प्रीतिमेंतोतुमऐसेचितौतहो बैरमेंधौंकहोकैसेचितैहो
२१ ॥ अधमादूतीलक्षण । दोहा ॥ अधमादूतीसोजुवह
कहैसतरहैंवात ॥ कहतसुकबितेईसबै जिनकीमा
बदात १७ ॥ यथासवैया ॥ मारमरोरसीडारीख

हिह्वांलगिक्योंनजियावतआनिहौं। वाकोतोजिवतुमहीं सोंबँध्यो तुमपैनहिंछोड़तआपनीवानिहौ । मैंतोकह्यो ईचहौंसमुझाइ कहाकरिहौजोकहेबुरोमानिहौं । जानो कहातुमपीरअहीर बड़ेकपटीचतुराईकीखानिहौ २२ दोहा ॥ बिरहनिवेदनआदिदै संघट्टनादिनाम ॥ सुक बिनकहेबिचारिके दूतीकेयेकाम १८ बिरहबिकलताहुहु नकी दूतीकहतिजुआइ॥ बिरहानिवेदनकहतहैंतासोंस बकबिराइ १९ ॥यथा। सवैया ॥कछुआगिसीजागिउठी उहिकेतनपौनकेलागतहूससकै। मुरझानियेजातिघरी हूँघरीयहभेदकहूँकहिकैनसकै । मिटिबेकीनहींकोउको टिकरोयहवेदनवेदनकेरसकै। तुमवादिनफूलकीखैंचि दईहीअजौंवहैचोटहियेकसकै२३॥संघट्टनलक्षण। दोहा ॥ मीठेबैननिजहँदुहूँदूतीदेइमिलाइ ॥ संघटनतासोंकहैं सुकबिनकेसमुदाइ २० ॥ यथा ।सवैया ॥ वैउतनागरनंद कुमारऔतैंहूँइतैवृषभानललीहै। जोरीबनीहैदुहूँकीअ पूरबपूरबपुण्यकीबेलिफलीहै । जोवतहैंकबकेमगुठाढ़े अकेलेजहांवहकुंजगलीहै । वेगिनजातिलजातिकहा यहजातिजोन्हाईकीरातिचलीहै२४॥ तासांभेदा । दोहा॥ दासीधाइकहीसखीरजकादिककीनारि ॥ संन्यासिनी परोसिनीअरुशिलिपनीविचारि २१ दुहूँओरतेयेसबै दूतीहोतीआनि ॥ न्यारेन्यारेभेदयेतिनकेकहतबखा नि २२ कबहुँकतरुणीआपुकीआपुहिदूतीहोइ ॥ ताहि स्वयंदूतीकहतकविपंडितसबकोइ २३ ॥दासीदूतीयथा। सवैया ॥ ताहीसोंराखतिप्यारबड़ोकछुरावरीयेचरचा

---

१ वेदोक्त रसदयासेभी ॥

जोचलावै । कांपतिदेहकंटीलीह्वैआवतिकोऊतिहारो
जोनामसुनावै। रैनिदिनाहुलसीसीरहैठकुराइनिकोकछु
औरनभावै । सोईकथाकहवावतीजामेंकछूमजकरति
हारोइआवै २५ ॥ धाइदूती। कवित्त ॥ जैसेतुम्हेंसौंरुई
नभावैंऐसे वाहूकेगुराईयौतिहारीजियजगावतिआगि
है। रंगुकहाकाहूकोलगतुकहूँदौरिएकुताकोतौनेरंगजो
ईजासोंरह्योपागिहै । दोऊमिलिएकठौरबैठोखेलोहँसो
तुमअजानह्वैऐसेकहूँचलियतभागिहै।सांवरेकीसौंरुईतु
म्हेंलगिजैहैतोतुम्हारीनगुराईकहासांवरेकेलागिहै२६॥
सखीदूतीयथा । सवैया ॥ कारेमहाअनियारेअमोलहैंकोल
जिन्हैंलखिलागतफीके ।बादिहिवाकेकहोतुमजाइहमा
रेतोरुखनहीरहैंजीके । आरसीलैतुमदोऊइकंतह्वैदेख
तक्योंनधौंकौनकेनीके ।·ऐसेबड़ेकहानैनतिहारेहैंजैसे
बड़ेहैंहमारीसखीके २७ ॥ रजकिनीदूतीयथा। सवैया ॥
देतीहोधोइबेकोतबहींफिरिमांगतीहोकरिभौंहतनैनी ।
ह्वांतोवैवीचहींलोहिंछोड़ाइसुगंधनरीझिरहेंमृगनैनी ।
धोइतोदेउँजोधोवनपाऊंलखीउनकीमेंविलोकनिपैनी ।
राखतलैलैलगाइहियेकबहूँअंगियाकबहूउपरैनी२८॥
मालिनिदूतियथा। कवित्त ॥ तेरेतनवासकीओहासकीसुर
तिकैन्नमेलीकेफूलनिचाहिचाहिललचातहैं । चंपकेपुहु
पपेखिपेखिप्राणप्यारीतेरीगक्करगुराई मनआनिमुसुका
तहैं । कहूँतोनजरिपरीह्वैहौउतजातिमोहिंवूभ्योतोसु
चाहतपैबूभतसकातहैं । जोईफूलदेउँसोईहाथलैधरीकु
तेरेअंगनिकीसुधिकैविसूरिरहिजातहैं २९ ॥ सवैया ॥

१ चादर ॥

कहूँतेपुहुपआनिहराहौंबनावतिपैयहैदहशतिमेरेजियमें जगतिहै। बिनहींसुवासकेसुमनल्याइल्याइयहकहैगी किदेखोमोहिंमालिनीठगतिहै। कहतनबनैकान्हदेखत हीरीझिजैहोजैसीकछुबासवाकेअंगउमँगतिहै। ढिग जातबेलिहूकेचंपकेचमेलिहूकेफूलनकी बासफिरिफीकी येलगतिहैं ३० ॥ चुड़िहेरिनदूतीयथा। सवैया ॥ वादिन तेकछुऔरसुहातनऐसेलटूह्वैगयेमनभावन। बूझ्योकरै सबतेरीयेबातेंनदेतकहूँकवहूँइतआवन। मोतनडीठि कियेरिसकीतूलगीसिसिकीनकोशोरमचावन। कान्हदु रेकहुँदेखतहेहौंलगीजबतोहिंचुरीपहिरावन ३१ ॥पुनः॥ रीझिरहोगेललालखिकैसिगरोतनसूक्षमतोलछमासे। पैहगदीरघदोऊमहाचतुराईनिकाईकीजोरैंजमासे। ना हींनहींननकैऔनचैकरखैंचतिदेहधरेसुखमासे। जात कहेनकरैवहप्यारीचुरीपहिरावतजैसेतमासे ३२ ॥नाइन दूतीयथा। सवैया ॥ गैलवहैउनहींकीचलीबड़ीवेरलौंबा तनहींविरमावत। तूधनिहैधनियोंकहिकैगहिकैकरमेरे हियेमेंलगावत। मेरियैकांगहीमोहिंपैलैशिरमेंरेहिकेति कौव्योंतबतावत। आयोचहौंजबहींइतहींतबबेनावना वनमोहिंसिखावत ३३ ॥ कवित्त ॥ हरिजूहजूरही निरखिरीझिजैहोवहजैसीहैसलोनीऐसीरंभाहैनरतिहै। फूलनसोंरचिरचिबेनीमें बनाइतबऐसीरीझिरही जैसी कहीनपरतिहै। मोहिंलागीबूझनकीकौनेतूसिखाईमें तिहारोनाउँलियोगाढ़ीतबतेअरतिहै। कौनकेहैंकैसे हेंकहांकेहैंवेकान्हअब रात्योदिनयेईबातेंबूझिबोकरति

है ३४॥ सुनारिनदूतीयथा । सवैया ॥कंठलगौहरिकेतुमयों
कहिमैंजबकंठसिरीपहिराई । देहकँपीसिगरीतबहींअ
रुद्धैजरदीमुहँऊपरआई । नीकेमेंह्वैगयोआनिकहाधौंयहै
सबहींकेभईदुचिताई । नोकगड़ीकहुँमेंहूँयहैकहिप्यारी
तिहारीकीबातछिपाई ३५ ॥ पुनः । सवैया ॥ जाइकहै
नहमारीदशाकबहूँतोभटूकरिदैमनभायो । योंकहिप्या
रीपठाईउतैअरुव्योंतकछूगहनेकोबतायो । कानतख्यो
नालगीपहिरावनत्योंढिगजैब्रैकोऔसरपायो । हांसीकी
बातकछूकहिनारिसुनारीसँदेशोपियाहिसुनायो ३६ ॥
तंबोलिनिदूतीयथा । सवैया ॥ प्यारीतिहारीपैजातिहौंरोज
बहौइनबातनहीविरमावै । पानतिहारेदियेजबदेउँकँपैत
बहींमुखपीरीह्वैआवै । ताकेदुरावनकोहियभावहिमोकहैं
बोलिसखीसमुझावै । बूझिहैतोहिनएरीगँवारिविरानमें
एतीसुपारीलगावै३७॥संन्यासिनीदूतीयथा॥सवैया॥आवत
हीउठिआदरकैसिगरीमिलिदौरींकिसिद्धिनिआई।काहू
केशीशमेंहाथदियोपढ़िकाहूकेमाथबिभूतिलगाई । बैठि
गईमृगछालाबिछायकैराधिकैआपनेपासबुलाई । औण
समीपह्वैगोदमेंराखि गोसांइनिगोसेकीबातसुनाई३८॥
परोसिनदूतीयथा । सवैया॥ आइइतैमुसुक्याइचितै घरुमे
रोसुधाकेसमूहसमोवति । रावरीबातेंजोकोउकहै तो
लगाइटकीमुहँवाहीकोजोवति । देखाचहौतोरहौकहूँबै
ठिसुजागतहीसिगरीनिशिखोवति । रोपपरोसिनीकैपि
यसोंदिनद्वैकते संगहमारेइसोवति ३९ ॥ पुनः ॥ हाथ
तिहारेकीखोरिबनाये कहांतेधौंहौंउनआजुनिहारी ।

आउकहोयहकोनेदई हमैंवूभिठगोरीसीयोंकछुडारी। नाउमैंतेरोलियोतबते अबमोंसोंयहैकहैंकुंजबिहारी। जायहटीकोतिहारेदियो सोपरोसिनिकैसीधोंहैहैतिहारी ४० ॥ शिल्पिनीदूतीयथा। सवैया ॥ तोहिधोंदेखिगये कितहै तबतेउनकोकछुऔरनभावत। मोघरआइलटूहैललासबआपुहिबैठिकेरंगुबनावत। चित्रबिचित्रबनाइहोंदेतिहों पैउनकेमनएकोनआवत। हाथदैलेखनीखाइहहाहरि तेरियैसूरतिमोपैलिखावत॥ पुनः॥ राबरीसूरतिदेखनआवति भोरहितेउठिभौनहमारे। सींकनमोखिलगैलिखिबो करकांपिउठैकलमोहमहारे। छांहलौंछोडैक्षणौनछबीली छटानिसोंछूटीलटैछिटकारे। वाहिकछूअबऔरनभावतु एकरहीरंगिरंगतिहारे ४१ स्वयंदूतीयथा। सवैया ॥ ल्याईहिगागरिसोऊगिरीलखिसूनोनिकुञ्जकैंप्योसबगातहै। जानोंनआईकहांतेधोंराति अंधेरीपरीहीघरीअधिकातहै। कोहोजुठाढ़ेइतैकिनऔवो तुम्हैंलखिनेकसुजिवठहरातहै। नेकुपठाइनआवतहौघर मोपैअकेलेगयोनहिंजातहै ४२॥ अथ हावानांलक्षणं। दोहा॥ तरुणिनकेशृंगारते प्रकटजेहोतसुभाय। हावकहततिनसोंसबैसुकविनकेसमुदाय २४ लीलाबहुरिविलासकहिपुनिवीक्षितहिगनाइ॥ विभ्रमकिलकिंचितबहुरिमोटाइतहिबताइ २५ पुनिकुट्टमितबताइकै कहिविब्बोकबनाइ ॥ बहुरिललितकहिविहितपुनितपनफेरिमदहाइ २६ पुनिविक्षेपगनाइकै मौग्धबहुरि मनआनि॥ हेलाहावइतेकहे जानतहैंसबजानि २७॥

भावहावहेलादितिय अलङ्काररहैंबीश ॥ तिनहिनमेंयेहा वहैं कहतकविनकेईश २८ ॥ लीलाहावलक्षण । दोहा ॥ बोलनिचलनिचितौनिसब भांतिनकरिअनुरागु ॥ ली लतासोंकहतहैं करैजुपियकोस्वांगु २९ ॥ यथा॥सवैया ॥ जोपटुपीतकिरीटधर्यो तोसुहारलुरैछतियांछबिपैहै । स्वांगुललाकोतोकीन्होसही येजूपैसब भांतिनिबाह्योन जैहै । नूपुरमौनगहेरहिहैं अबतोरसनाधुनिघोरमचैहै । जोतुमराधाजूकान्हभयेहो तोकान्हहुराधाकियेबनिऐहै ४३ ॥ बिलासलक्षण । दोहा ॥ देखिपियैतियकरतिजे म नहरिबेकेभाइ ॥ ताकोकहतबिलासहैं सुकबिनकेसमु दाइ ३० ॥ यथा॥सवैया ॥ कबहूँकरैचन्दनआड़लिला र कहूंकरिदैरँगुकेसरिको।कबहूँकरिफूलनकोगहनो कब हूँकिकरैसुकुतालरिको । मिसुकैकैकछूइतआइरहै थिर ह्वैनरहैघरमेंघरिको । हरिलीबोकरैहरिनीनयनी हरभां तिनहीहिरदोहरिको ४४ ॥ बीक्षितलक्षण । दोहा ॥ थो रोकियेशृंगारजहँ शोभाअतिबढ़िजाइ ॥ ताहिकहताबि क्षित्तहैं सुकबिनकेसमुदाइ ३१ ॥ यथा।सवैया ॥ देहकी दीपतिकुन्दनकैसी हराहियमेंअतिलागतनीको । सारी सपेदखुलीकछुऐसी जोचाहतिचित्तहरैसबहीको । औ रैचढ़ीकछुआननओप लखेमिटिजातगुमानशशीको । सौतिनकोगहनोनिदरै यहगोरीकेभालमेंरोरीकोटीको ४५ ॥ बिभ्रमलक्षण । दोहा ॥ रससोंभूषणभूलितिय प हिरैऔरहिठौर ॥ हावताहिबिभ्रमकहैं जितैसुकबिशिर मौर ३२ ॥ यथा॥सवैया ॥ तनआपनोआपसवांरतही त

---

१ कबहूं ॥

रुपीतहँऔरनकोउबियो । नँदनन्दनआनिकढ़ेइतका हू कहूँयहबोलसुनाइदियो । उठिदेखनदौरीकुरैदुरेदार दियेहरिकेलखिबेमेंहियो । गहिडारीगरेरसहीरसना क टिकेतटहारलपेटिलियो ४६ ॥ किलकिंचितहावलक्षण। दोहा ॥ होतजहांडरअरुहँसी क्रोधहर्षइकबार॥तासोंकि लकिंचितकहत सुकबिनकेसरदार ३३ ॥ यथा।कवित्त ॥ त्योरीचढ़ावतचढ़ैमुहँपरऔरैओपरुषोहैं बैननिरसमधु रसुधातेहैं । नीबीगहेनिपटनवोढ़ाकीसीनाईनाह नाहक ईदूनीभईजातिकरिहांतेहैं । जबजबप्यारोअंकभरैतब तबवह प्यारीएकबारचौंकिकहैरूखीबातेहैं । रोवतिरि सातिमुसुकातिहाहाखातिजाति छलबलसोंकरतित्रूटि बेकीघातेहैं ४७ ॥ मोट्टायितलक्षण । दोहा ॥ प्रियकथा नसुनिमिलनको होतजुप्रगटसुभाय ॥ तासोंमोट्टायित कहैं हावसबैकबिराय ३४ ॥ यथा।सवैया॥[1] बूझतिहैंज कबांधिखरी सुधौंकोहैंकहांकेहैंकुञ्जबिहारी। वाहीघरी तेउसासेबढ़्यो औकढ़ेअँसुवाअँखियानतेभारी । आ न्योहैबोलिकहांतेधौंमैं ठकुराइनिकेढिगहोइगँवारी । कांटोनिकारिबेएककहूं उहितोसबदेहकटीलीकँडारी४८ कुट्टमितलक्षण। दोहा ॥ अधरउरजकेशनगहे भूँठीरू खीहोय ॥ तियहियसुखपावैतहां हावकुट्टमितसोय ३५ सवैया ॥ करसोंकरखैंचतहीसतराइरुखोहँसीबातेंकहैनि दरै । परयङ्कचढ़ावतभौंहेंचढ़ाइ अनेकसोतापसमूह हरै । पुनिवेनीगहेमुहँसोंमुहँछ्वाइ ज्योंज्योंमनभावन अंकभरै । तियत्योंत्योंहियेसुखपावैपै भूठेइरोवैरिसाय

---

[1] यह बूझतिहैं में कहति हैं। सो इनि मिलाप की चाह है॥

तमाशेकरै ४६ ॥ बिब्बोकलक्षण । दोहा ॥ कपटअनादर करतिजहँ निपटनेहतेबाल ॥ ताहिकहतबिब्बोकहैंपंडितगुणीरसाल ३६ ॥ यथा । सवैया ॥ नीकोनहैकछुदेखतहूँ बिधिनेकुपैनैनबड़ेकरिडारे । ताहीतेऐंठिअकाशनिहारतकूरकुरूपडरावनकारे । ढीठीदैदैढिगबैठतआनि महादुखदानदईकेसँवारे । आपनींसीकतखैंचिहमारी तूपामरीओढ़तकामरीवारे ५० ॥ ललितलक्षण । दोहा ॥ अंगनकीसुकुमारताचलनिचितौनिअनूप ॥ जहँबरणत तहँईकहत ललितकबिनकेभूप ३७ ॥ यथा । सवैया ॥ देहकीदीपतिकुन्दनकैसीलगैरतिमान्दिरकेसबठौंरे । बैरहैचांदनीसीमुहँखोले सुबासतेभीरकरेरहैंभौंरे । श्वेतबिछौननमेंहूकहूँक्षण एकलोंछाइरहैछबिऔरे । प्यारीधरैपगुएकुतहां पगुद्वैकलौंईगुरसोरँगुदौंरे ५१ ॥ बिहितलक्षण । दोहा ॥ पियहिमिलेहूँजहँपिया लाजनबचनकहैन ॥ बिहितकहततहँसुकबिसब सुनतहोतचितचैन ३८ ॥ यथा । सवैया ॥ दीजियेसीखकहातुमतौ अठिलाहटसोंमगदैडमडोलति । मोढिगपैहियखोलिकैख्यालके खासेखजानेकहांतिधौंखोलति । ह्यांअबकोनसुनैहमसों तुमजैसीकछूबतियांगाढ़िछोलति । बोलिबोभावैतिहारोजिन्हैंतिनकेढिगपैकबहूँनहिंबोलति ५२ ॥ तपनलक्षण । दोहा पियबिछुरेसन्तापको बढ़ैजुकछूस्वभाव ॥ ताहीसोंसबसुकबिमिलि तपनकहतहैंहाव ३९ ॥ यथा । सवैया ॥ नेकुउसीरोनसीरोलगै घनसारदवागिनहूँते करेठो । जोयहजोन्हकीझारसकैसहि सोसकैआगिकेपुञ्जमेंपैठो । मैं

---

१ फरडो ॥

यहजायकहों घनश्यामसे काहेकोकोहकैंभौंहउमेठो। जारिकैकोंयुवतीनकोज्यों शशिजेठकेसूरहूतेभयोजेठो ५३ मदलक्षण । दोहा ॥ यौवनकेमदतरुणिजहँ मतवारीसी होय ॥ तहांकहतमदहावहैं कबिपण्डितसबकोय ४० यथा।सवैया॥ क्वैज्योइन्दुतेबिन्दुसुधाकोमनोंनकबेसरिको मुकुताभौंहलै ।लवढ़ीअलिपांतिज्योंचम्पेकेमालमेंबाहनसोहतबाहुबलै । यहकञ्चनचारुचहूंदिशिदेह अछेह छटाछबिकीउछलै ।मदयौवनकेमतवारीबड़ीअतिऐंड़भरीअठिलातिचलै५४ ॥ विक्षेपलक्षण । दोहा ॥ प्यारेईकेरसजहांरीझिरहतिहैवाम॥सुधिनकहूँविक्षेपतहँकहतपरमअभिराम ४१ ॥ यथा । सवैया ॥ भूखनप्यासकछूअतिहीकुम्हिलानीयेजातिमुठीकैसोफूलहै।बावरीहैमतवारीकिधौंअबकोऊकछूजुकहैसुकबूलहै। नेकुनहींपरवाहकहूँछतियाहूँतेजोउड़िजातदुकूलहै। डीठिगयेपरिकान्हकहूँतबतेकछुयाकोभयोयहशूलहै ५५॥ मौग्ध्यलक्षण । दोहा॥ मूरखईकीजहँकछूबातैंकहैजुवाम ॥ मौग्धहावतहँकहतहैंकविपंडितकोनाम ४२ ॥ यथा । सवैया ॥ न्हातइन्हाततिहारेइश्यामकलिंदियोश्यामभईबहुतेहै । धोखेहूधोयहौंयामेंकहूँतोयहैरँगसारिनमेंसरसैहै । रावरेअंगकोरंगकहूँयहमेरेहुअंगनिमेंलगिजैहै । छैलछबीलेछुवोगेजोमोहितोगातनमेरेगोराईनरैहै५६॥हेलालक्षण। दोहा॥ प्रौढ़ातियजबसुरतिमेंपियसोंढीठोदेइ ॥ सोहैहेलाहावयहतुरतहियोहरिलेइ ४३ ॥ यथा । सवैया ॥ बितईसिगरीनिशिप्यारीपियापियसोंरतिकेलिकलाकरिकै ।

---

१ भौंहलखन २ मर्कत को ॥

कह्योदेहुसिंगारिसिंगारहमारेगयेजेकहूँतेकहूँटरिकै ।
उरमेंसुरभाइहरापहिराइमरूंकरिधीरजकोधरिकै।छवि
देखिछकेकछुऐसेललाजुलईवहैफेरिभुजाभरिकै ५७॥
इतिहावाः अथरसाःप्रतिपाद्यंते। दोहा ॥ मिलिविभावअनु
भावसंचारीसात्विकआनि ॥ स्वादसहितथायिहिकरै
ताहीकोरसजानि ४४ भावादिकसबअहहिंयेसकलरस
निकेहेतु ॥ ताहीतेपहिलेइन्हेंपरगटहौंकहिदेतु ४५
रसानुकूलबिकारकोभावकहतकविभीर ॥ सोऊपुनिद्वै
भांतियकमानसएकशरीर ४६ थायीबिभिचारीबहुरि
बुविधमानसोजानि॥द्वैविकारसीरीरतिहिसात्विकभाव
बखानि ४७ रतिहांसीअरुशोकपुनिक्रोधउछाहगनाय॥
भयघिनुविस्मयसहितयेआठौंथायीभाय ४८ कहिशिं
गारहांसीकिरुणारौद्रवीरकरिपाठ॥ भयानकौवीभत्सअ
रुअद्भुतमिलिरसआठ ४९ बैरागहिंथायीकियेरसनव
यौंहैं संत॥ परगटहौंवकहतसुनेसुखपैहैंबुधिवंत ५० ॥
अथशृंगार। दोहा ॥ जाकोथायीभावरतिसोरसहैशृंगार॥
विप्रलंभसंभोगमिलिताकोद्विविधिविचार ५१ तहँवि
भावद्वैभांतिसबसुकविनकियोविवेक ॥ आलंबनहैएक
अरुउद्दीपनहैएक ५२ होइजाहिआलंबरससोआलं
बनमानि ॥ रसहिजुउद्दीपनकरैसोउद्दीपनजानि ५३
तहँनायकअरुनायकाआलंबनजियजानि॥ उद्यानादि
कपुनितहांउद्दीपनमनआनि ५४ प्रगटकटाक्षादिकत
हांकविनकहेअनुभाव॥ उन्मादादिकपुनितहांसंचारीहैं
भाव ५५ विप्रलंभबिछुरेनकोमिलतनकोसंभोग॥रस

शृंगारद्वैभांतियहवरणतहैंकविलोग ५६॥ अथविप्रलंभको उदाहरण । सवैया ॥ नीरउसीरकेसीरीभईकहितापहिमिला इहैकोवकहांतें । आंचगुलाबकीवैहैकहापजखोतनचं दनकीचरचातें । सीरेउपायनसौंनकछूभयोमैंसखिसीखि दईअबतातें । मोहिंघरीकलोंज्याग्रोचहैतोकहैकिनवीही विसीसीकीवातें ५८ ॥ अथसंभोग । सवैया ॥ चंदछटा छिटकीक्षितिअंबरमीठीसुधासीसुनीपिकबानी । सीरेस मीरहहरैंहहरैंआयकहूंतेसुबासकीपांतिबितानी । चांदनी केकरिबैठेविछावनेराजिवनैनऔराधिकारानी । देखि दुहूंकेहियेइहिऔसरकामकलाअतिहीसरसानी ५६ ॥ अथालंबनविभावउदाहरण । सवैया ॥ काहूकेहोतहैंनैनई नीकेऔकाहूकेआननहीमेंनिकाई । काहूकीहोतिचितौ नियैनीकीऔकाहूकेचालइमेंचतुराई । औरैविरंचिहैहू जोकहूंजोमनोहरमूरतिऐसीबनाई । नागरनंदलड़ाइते केनखतेशिखलोंसखिसुंदरताई ६० ॥ पुनः ॥ हाथछुये छविमैलियेहोतिविरंचिमनोंमनहींसोंबनाई । हीमेंअजों गड़ेनैनबड़ेबड़ेभागनदैगईनेकुदेखाई । अंबरनीलके अंतरफैलिरहीमुँहचंदकीसुंदरताई । राहुरिसायकैराखी मनोंकरिमध्यअँध्यारीकेजोरिजुन्हाई ६१ ॥ अथ उद्दी- पन बिरह उदाहरण । सवैया ॥ फूलिरहेबनवागसबैलाखि फूलनिफूलिगयोमनुमेरो । फूलनहीकोबिछावनोकैगह नोकियोफूलनहीकोघनेरो । लाल[३]पलाशनयेचहूंओर तेमैनप्रतापकियोघनघेरो । राखेयोंफूलैफैलाइफैलाइ भयोऋतुराजकोमानहुँडेरो ६२॥ अथानुभाव उदाहरण ।

---

१ मरणावस्था को पहुंची   २ फैलाई   ३ नम्रभुके हैं

सवैया ॥ काहेतुआजुनिहीलकियोशिरकाकेदियोरसि काईकोबानो । केतेउभौंहनभायकियेअँगरानिजँभानि कोखोलिखजानो । दौरि१दरीचीके२द्वारदुरीसुकहैकिनका परजिवललचानो। कोधनिहै३धनिआनभयोतुवकोटिक टाक्षनकोजुनिशानो ६३ ॥ अथ संचारीगण । दोहा ॥ कहिनिरवेदगलानिपुनिशंकाऽसूयामानि ॥ मदश्रमआलसदैन पुनिचिंतामोहबखानि ५७ सुमृतिबहुरिधृतिचपलता ब्रीड़ाहर्षगनाइ ॥ जड़तापुनिआबेगकहिगरबाविषादबताइ ५८ उत्सुकतानिद्राबहुरि अपस्मारमनआनि ॥ सुप्तबिबोधअमर्षपुनि अवहित्थहिजियजानि ५९ बहुरिउग्रतामतिबहुरि व्याधिबहुरिउन्माद ॥ मरणत्रास वितर्कये४संचारीअबिबाद ६०॥ अथनिर्वेद । दोहा ॥ लगनिविपतिबहुकालसहि करैजुजियमेंखेद ॥ तातेअपनोनिंदरिबो ताहिकहतनिर्वेद ६१ बिवरणता अरुदीनताआँसुवाऊंचीसांस ॥ येसुभाइतहँआनिके तनमेंकरतप्रकास ६२ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ वेदनकेमतमेंनलग्यो रह्यो५कामकीविदनमेंनित सान्यो । दीनोनकाहूकहूँकबहूं अरुदीनोकोऊनकहूंसनमान्यो । ६ठाकुरठौरहिठौरलखे अजों ठाकुरठीकनहींपहिंचान्यो । सूमनमेंभरम्योपैयशोमति ७सूमनमेंकबहूंनहिं आन्यो ६४ ॥ अथग्लानि । दोहा ॥ रतिश्रमभूखरुप्यासते शिथिलहोतजहँगात ॥ तासोंकहतगलानितहँ कंपादिकबढ़िजात ६३ ॥ उदाहरण । सवैया ॥

---

१ दबलीच २ खीपसा ३ सब ४ प्रथमपदमुद्राहै याकेयहलस्यते चौर इतर्हांबचार आयी ५ दीनजनोंका राजा ६ पुत्र ॥

[1]केसरिकीकहुँरंग रह्यो नपैऔरैचढ़ीअँगअंगनिकाई। ढीलीसीबोलनिलागैरसीली बढ़ीनखतेशिखलौंशिथिलाई।त्यौंअधमूँदेउनींदिसेनैननि भोरकेकौलनिकीछबिछाई। पूरेमनोरथकेपतिके रतिकेघरसोंरतिसीउठिआई ६५॥ अथशंका। दोहा॥निजदुरनयपरकूरतातातेजोडरहोय॥कम्पशोकसुरभङ्गयुतशङ्काकहियेसोय ६४॥उदाहरण सवैया ॥नन्दकेद्वारगईहौंमैंकाजको नन्दतोऔरकीऔरेबतैहैं। देहकँपैडरपैहियोमेरो नजानिपरैधौंकहाअबकैहैं। ऐसीचवाइनेहैंचहुँओरये[2] आपनेकाजतेंबाजिनऐहैं। आजुहरापहिर्यौहरिको सुमैंदेखिहौंकैसेचवावचलैहैं ६६ ॥ अथअसूया। दोहा ॥ उहैअसूयाऔरको जहांभलोनसुहाइ॥ गरबकुटिलईक्रोधतहँयेसबहोतसुभाइ ६५ ॥उदाहरण। सवैया ॥ नेकनऔरकोठौररह्योवहऐसीकछूउरआनिगड़ीहै । भूलेहुऔरनभावतीहैचितवाहीकीचारुचितौनिअड़ीहै। ढेढ़ीवहौअरुआपऊटेढ़टेढ़ाईदुहूंदिशितेउमड़ीहै । चाहैनक्योंहरिकूबरीकोवहदेखतनीकीऔजातिबड़ीहै ६७ ॥ अथमद। दोहा ॥ कहतहरषउतकरषसोंमदसिगरेकविराय ॥ बचननिचलनिमेंचलबिचलऔरौअंगसुभाय ६६॥ उदाहरण। सवैया ॥ सोहैहँसौहैसेनैनकियेतुतरोहैंसेबैनकहेमनभाये। पाखड़ेमुकुतानसमेत छुटेछबिदेतछवानिलौंछाये। ऐंडभरीअठिलाहटसों चलैप्यारीबिलासकीबेलिबढ़ाये। सूधेसुभाइहुतेअबतो मदभाइकेभेदअनेकसिखाये ६८ ॥

---

१ रतितेग्लानि पूर्वापश्चात्मानिबेमें निषिद्धकर्मठद्दरेहै द्रव्यस्तुकीध्यानिमें ठिदेतोनिंदद कोधांतर्भाधद्दोयहैताते यद्द३० २ मिटिएयोतथापि ३ननदंमेरी ४नंदार्कारद्दैते ५रिंडुरी ॥

अथश्रम। दोहा॥ रतिगतिसोंश्रातिखेदतन जहांकहूंबढ़ि
जाय॥ ताहीसोंश्रमकहतहैं बड़ेबड़ेकबिराय ६७॥
उदाहरण। सवैया॥ कौनहैखेलजोखेलनजाति कहांस
गरोदिनुश्राइबितैहै। श्रायेप्रस्वेदकेबिंदुकपोलश्रो
दीहउसासनकौलगिलैहै। कौनहैशूलमुठीकेसोफूलग
ईमुरझाइसीबोलतिपैहै। बारहिंबारललैयहऐसही
बारकटूटिकहूंकटिजैहै ६६॥ अथ आलस्य। दोहा॥ उ
त्थानादिककीजहांअक्षमताईहोइ॥ तहांकहतश्रालस्य
हैंकबिकोबिदसबकोइ ६८ कातरताईहोतिजहँ सकल
कियनमेंश्राइ॥ सुकबिनयाकोप्रगटकै थेईकहैसुभाइ
६६॥ उदाहरण। सवैया॥ दोहदैमासद्वैचारिभयेश्रब
गातद्वैश्रायेसबैशिथिलौहैं। श्रालसतेउठिजातनहीं
गुरुलोगनचाहिरहैतिरछौहैं। रावरीहैरुचिकापैकहौज
बयोंसखीबूझतीधाइकैसौहैं। श्रांखैंलजीलीकियेललल
नातिबलालकीश्रोरलखैललचौहैं ७०॥ अथदैन्य। दोहा॥
अधिकाईजोदुःखकीदैन्यताहिमनश्रानि॥ कायकलेश
प्रगटतहां बिरहादिकतेजानि ७०॥ उदाहरण। कवित्त॥
काहूसखीकमलकेपातलैलगायेगात काहूसखीराख्योउ
रकमलकोमूलहै। काहूसीरीबैयरितेबीचुकैबचायलीनी
काहूराख्योचांदनीकेश्रोटदैदुकूलहै। काल्हिहींचलेहैं
कान्हमथुराकोश्राजतनसूखिगयो रांधिकाकोचंपेकोसो
फूलहै। जहांलग्योनिहुतहांदेखियतयहैरीति. मीनसुलगी
प्रीतिपैजोहोतयहशूलहै ७१॥ अथ चिंता। दोहा॥ तिय
हिकौनमिसदेखिये जातेजीसुखहोइ॥ योंचितचिंताहो

तिजोचिंताकहियेसोइ ७१॥ उदाहरण। सवैया॥ आजुट
ग्यारीहैहैजतहांबिछुरेकीबिथाहमदूरिकैडारिहैं। आइहै
धौंकबसांभनिगोड़ीकछूयोंरहेहमक्योंतबिचारिहैं। कौतु
ककोसिगरीमिलिसुंदरिबिज्जुछटासीअटापगुधारिहैं।
हैजकोचंदनिहारिबेकेमिस प्यारीकेआननचंदनिहारि
हैं ७२॥ अथ मोह। दोहा॥ मोहवहैडरदुःखतेजहां
बिसुधजिवहोइ॥ जपुहैवोअरुघूमिबोइतेसुभाइसमोइ
७२॥ उदाहरण। सवैया॥ अबतोयहज्योलगीलेनजु
न्हाई लगैसिगरोजगज्वालमयो। फिरिफूलबढ़ावन
शूललगे उपज्योयहजीकोजबालनयो। कहुँऔधिके
बासरलौंनरहीबिनकाजकहांतेधौंचेतभयो। मनमोहन
केबिछुरेघरीहैकलौंमूर्छामोहिंजियायलयो ७३॥ अथ
सुमृति। दोहा॥ कबहूंदेखेकीकहूंसुधिजबजियमेंहोइ॥
ताहीसोंसबकहतहैं सुमृतिसुकबिसबकोइ ७३॥ उदा
हरण। सवैया॥ आइगईअलबेलीअकेलीही वादिन
छूटीलटैंछिटिकाये। जीमेंगड़ेतिलरीकेबड़ेबड़े मोतिन
क्षत्रनकीछबिछाये। भूलिहूंभूलैनभौंहेंचढ़ाइकहीबति
यांजेगरेगरोलाये। मोहिंरहेनकछूसुधिवाहीसुधानिधि
सेमुहँकीसुधिआये ७४॥ अथधृति। दोहा॥ होतजहां
संतोषजियज्ञानशकतितेआइ॥ ताहीसोंधृतिकहत हैं
सुकबिनकेसमुदाइ ७४॥ उदाहरण। सवैया॥ मैंतोनस
धेनिहारिसकौं वेसदाइकईटकमोहिंनिहारें। लाजानि
जाउँगड़ीहौंतौवेहँसिकैनिजबांहगरेगहिडारें। सौंहेंअ
रेईरहेंभरःयोआँखियानकेआगेतेनेकनःटारें।भावैसोजा

---

१ मूर्च्छातुकश्मलमोहौ २ दिवस ३, टरैं॥

इशिंगारुकरोयहप्यारेकोप्यारशिंगारहमारें ७५ ॥ अथ
चपलता। दोहा ॥ मत्सरद्वेषऽनुरागतेचंचलईजहँहोइ ॥
तहांचपलताकहतहैंकविपंडितसबकोइ ७५ ॥उदाहरण।
सवैया ॥ सँगएकसखीजोचलीतबतापर त्योरीचढ़ाइ
रिसानीखरी। बजैंबेनकेमैनगुरूशिषदैंबिनसाजहीनाच
निहारकरी। इहिगैलकैश्यामकहूंनिकरेठहरानीनन्नेकुस
नेहभरी। तियऊतरुकेतेऊकेकैअटापरबारहजारचढ़ीउ
तरी७६ ॥ अथव्रीडा। दोहा ॥ होइप्रकाशादिकनतेजियमें
आनिजुलाज ॥ ताहीसोंव्रीडाकहैंबड़ेबड़ेकविराज७६॥
उदाहरण। कवित्त ॥ ल्याईछलबलकैसहेलीकेलिमंदिरस
कुचसबअँगआनिओरछोरही। कंचुकीकीकसनिविचा
ख्योरबोलिबेकोनाहबांहनसोंछतियांछपाइक्षणछैरही। च
हंतिअंध्यारीकियोप्यारीसोऽबकैसेहोइ खुलतहीमुहँच
न्दचांदनीसीवैरही। अंचरागहतफूंकिदियोजोपैदियोतो
ऊ देहकीदिपतिदुपहरियासीछैरही७७ ॥अथहर्ष। दोहा॥
पियकेदरशनतेजहां अतिप्रसन्नमनहोइ ॥स्वेदपुलक
प्रगटैतहांहरषकहतसबकोइ७७॥उदाहरण। सवैया॥कछु
अंगकटीलेप्रफुल्लितनैन गयोहिरदोभरिआनँदहीं।
तनह्वैगयोक्षीणछिदीनचढ़ेते प्रस्वेदकनीमुखछायरहीं।
कहुँगैलमेंआवतश्यामसुने तहँराधाजुदेखिवेकोउमहीं।
कचऔकुचभारनसोंलफिकै कटिटूटिबेकीपरवाहिनहीं
७८॥ अथजड़ता। दोहा ॥ अचरजकेदेखेसुनेइष्टअनिष्ट
कथानि ॥ उपजपरतिहैतुरतई जड़ताअँगमेंआनि ७८
उदाहरण। सवैया ॥ लिखिकाढ़ीसीठाढ़ीयेछैरहीद्वार नदे

---

१ लचालच २ ट्रूंकनियां ३ ट्रूंवाड़ा या जग ॥

खतकाहूधौंकोक्कितहै । लखिकैभयोखीनसमूहसखीन
को घेरिरह्योइतहूँउतहै।समुभैनसुनैकछुकाहूकीबातको
जानैधौंश्रान्योकहाचितहै । सुधिहैनकछूघटकीपटकी
जितलागीटकीश्रटकीनितहै७८॥अथआवेग।दोहा॥जहां
अचानकअहितको होइहिडरुकिसँदेहु ॥तहांश्राहिश्रा
वेगतुम सबैजानिजियलेहु ७९ ॥ उदाहरण।सवैया ॥
मैंनेकहीहीभिलौरेमितौ मिलिबेकोमतानकोऊठहरा
नो । भाजिकेश्रायेकहूँतेकहूँकहोकोश्रबराखिहैजिवश्र
नुमानो। सोवतमैंसपनोकछुदेखि समूहश्ररिंदनकोश्र
कुलानो। हाथीरेहाथीहथ्यारहथ्यारपहारहुमैंपहुँच्यो म
रदानो ८० ॥ अथगरब।दोहा ॥ गरबवहैगुणरूपको जहीं
गरबबाढ़िजाइ ॥ तहांनिदरिबोसबनिको श्ररुविलास
अधिकाइ ८० ॥ उदाहरण। सवैया॥ यौवनकेमदसोंमत
वारीसी नोकिलसीश्रँखियानिश्रमोलै । बातरसीलीक
हैपैमहागरबीलीबुलायबरश्राइतेबोलै । फैलिसुगन्ध
समूहरहैं मुसक्यातिरहैजबहीमुहँखोलै। पीतमकेमनपै
ठतिसीयहऐंठतिसीश्रठिलातसीडोलै ८१ ॥ अथविषाद।
दोहा ॥इष्टबस्तुसंशयजहांकहियततहांविषाद ॥ बलन
चलैकछुश्रापनोजानिलेहुश्रविवाद८१उदाहरण।सवैया॥
परिछालेभयेश्रँगुरीनमेंयों निशिबासरश्रौंथिकेंग्योंसग
नै। दिनतीनिथेचारिभयेहैंचले श्रबहींकहँपाइयेश्याम
घनै । श्रबकीजैकहाश्रबलौंतोकरीही श्रनेकजियाइबे
कीयतनै । चहुँश्रोरतेचांदनीफैलिगई श्रबयाकोजिया
इबोकैसेबनै ८२ ॥ अथउत्सुकता। दोहा। ॥ पियमिलिबे

---

१ द्वांमबीलउठे इतिपाठः २ जाको ॥

कीढीलजहँ नेकौंसहीनजाइ ॥ दीहउसासउताइली हि
येतापअधिकाइ ८२ आवैअंगप्रस्वेदतहँ येसबहोहिं
सुभाइ॥ उत्सुकतातासोंकहत सुकबिनकेसमुदाइ ८३
उदाहरण। सवैया ॥ फूलनबेनीगुहीघरीद्वैकलौं गूथ्यो
घरीकहराकरिप्रीतिहै । पोथीलैहाथपढ़ीघरीचारिलौं
चित्तदैकोककलीनकीरीतिहै । आरसीदेखिबड़ेखनलौं
रची पीउरआइबेकी परकीतिहै । योंदिनबीत्योमरूक
रिआनि रह्योघरीद्वैकसोकैसेधौंबीतिहै ८३॥ अथनिद्रा।
दोहा ॥ मनसम्मीलनकोकहत निद्रासबकबिराइ ॥ अं
गिरैबोऽरुजंभाइबो चिंताअलससुभाइ ८४॥ उदाहरण।
सवैया ॥ सांझतेभोरलौंप्यारेजगाई जगैबेकेब्योंतकछू
फिरिनाधे । सोवतहीतहँख्यालनहीं करिदोऊलैफूल
कीमालसोंबांधेसेजहिमेंअँगिरातिजम्हातिअनेकतंमा
शेबढ़ावतिराधे । आधेमुँदेदृगआधेखुले अखरामुखते
कढ़ेआधेइआधे ८४ ॥ अथअपस्मार । दोहा॥ हियदुःखा
दिककोजहां ह्वैआवेआवेश ॥ अपस्मारतहँकहतहँ सि
गरेसुकबिनरेश ८५ कम्पफेननिश्वासभू पातादिक
तहँहोत ॥ शून्यहियोअपवित्रता याकोसहजउदोत
८६ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ देखतिहौंयहकैसीगिरी
अरु आइगयोमुखऊपरफेनुहै । जानिकहाउठिदौरी
सबैकहैंकोऊलग्यो किजग्योउरमैनहै । भूमिपरीहैबिथा
अन्नतो जबजाइनखाइभयोकलुचैनहै । याहिमनोंलगि
जातिहैंयांसी बिसासीकहूंजोब्रजावतबैनहै ८५॥ अथसुप्ति
दोहा ॥ अतिसुखसोंनिद्राजुहै सुपतिकहतहैंताहि ॥ उ

१ मकुनिषेध ॥

छुवासादिसुभाइतहैं औरनहींपरवाहि ८७ ॥ उदा०।
सवैया ॥ दोऊदुहूँकीभुजानिबँधे सुखसोयेहैंकैसिगरीम
नभाई। भेदकहूँनहिंनिकस्यो मिलिगेदोउगोरिगिरीश
कीनाई। आईदुरायदुहूँकीदशा यौंभईलखिहौंसखि
लालचहाई। जाड़ोनकैसकैआड़ोबितावति माघकीरा
तिनिदाघकीनाई ८६ ॥ अथविवोध। दोहा ॥ निद्राके
विच्छेदमें करिकैमनमेंसोध॥इंद्रियप्रथमप्रकाशसों पंडि
तकहतविवोध ८८तहांदृगनकोमीड़िवो अरुअँगिरानि
जँभानि॥ चटकारनअँगुरीनको येसुभाइमनआनि ८६
उदा०। सवैया॥ बैठीतियाउठिभोरहीसेजपै आरसीलै
मुखदेखिलजानी। केलिकेमंदिरतेघरआपने जाइवेको
अतिंहीसकुचानी। कोटिकटूकभईअँगिया जबहींउच
केकुंचकेअँगिरानी। चाहिकैचौगुनीचोपसोंप्यारे गरें
गहिकेलिवहैफिरिठानी ८७॥ अथअमर्ष। दोहा॥ मेटो
चाहतऔरको अहंकारजिहिठौर॥ अमरषकहतहांसवै
सुकविनकेशिरमौर ६०॥ उदा०। सवैया॥ अँगकोरँग
देखिसुभायहिको मिटिकुन्दनहूकी मजेजगई। बिनपा
नहिंत्यांअधरारँगदेखतईगुरकीद्युतिफीकीभई। दृग
अंजनहीबिनकंजनकी अरुखंजनकीछविछीनलई।
शशिकोमदमेटिवेकोनपिया मृगकेमदकीशिरआड़दई
६८॥ अथअवहित्था। दोहा॥ मिसुकरिकछुआपनी
दशादुरावैदार॥ तहांकहतअवहित्थहैं सुकविनकेसरदा
र ६१॥ उदा०। सवैया॥ गाइकैवेनुवजाइउठै अरु
आरसीदेखिसँवारतपागै। याहीगलीह्वैकलीनकेऊतरु

१ ये ओ २ निःकलंकमुखदेखि सकलंकलजैहै ३ बहाने॥

आवतयाटूपभानकीबागै। देहकटीलीकैकांपिउठैघबरा इरहैमनकेहुनलागै। कौनकोहैयहछोहरोसांवरो देखत मोहिंडेराव्रनलागै ८९॥ अथउग्रता। दोहा॥ निर्दयता सोंउग्रता कहतसबैकबिराय॥ परनिठुराईदीनता निजकीकहनिसुभाइ ९२॥ उदा०। सवैया॥ तेऊकेडारेहैं तीरसबै जिनफूलनकीकरतीहंमदामहै। कौनकसूरहि येधौंबिचारि हजारनछोड़िकरीहमछामहै। घेरेफिरैघरबा हिरहूनहिंदेतसुएकोघरीबिसरामहै। दीबोकरैदुखआठ हुयामअलीयहकामकसाइकोकामहै ९०॥ अथमति॥ दोहा॥ जहँवेदादिककेमतेकरियेकछूबिचार। तहांकहत हैंमतिसबैसुकबिनकेसरदार ९३॥ उदा०। सवैया॥ मनभावरेतासोंलग्योजुरह्यो सपनेहुनजाहिनैदेहदिखाई। काजबिचारइकेकरिये ज्ञोनजीकनआइसकैदुचिताई। जातिनपांतिनगोतबिचार्यो लईगहिकेवलसुंदरताई। जोयदुरायतेयोंलगतो तोसुआपनोईकरिलेतोकन्हाई ९१॥ अथव्याधि। दोहा॥ जहांकामसन्तापते कृशतादि कतनहोत॥ तहांकहतहैंव्याधिसब समुझिकबिनके गोत ९४॥ उदा०। सवैया॥ आगिलोंकैयोभभूकेउठैंगे गुलाबकपूरजोकोऊलगैहै। बीरहोजानतीहोयहपीर उसीरकेनीरनकेहूजुडैहै। तौलगितोनकहूंकलजौलौं बिसासीवहैइहिआरनऐहै। राहोछपाइरहोछतियांयहबै यरिलागतईबरिजैहै ९२॥ अथउन्माद। दोहा॥ बिनबिचारआचरणको कहतसबैउन्माद॥ वृथाऽऽलापऔशु वाहसीयेसुभाइअविवाद ९५॥ उदा०। सवैया॥ कबहूंव

कैरोवैरिसायहँसै कबहूंनिजभागहिकोनिदरै । घनश्याम भजेकतजातहो यौंकहिमेघनदेखिकेदौरिपरै । तनकोतन कोसुधिनाहिंकरै परछांहियोंआपनिदेखिडरै । पियकेबि छुरे भईबावरीसीपैजुदेखियेतोहियरोदहरै ६३ ॥ अथमरण । दोहा ॥ मरणानकाहूसुकविसोंकह्योसामुहेजाइ ॥ रससिं गारमेंपचमोंकाहूंनदियोबताइ ६६ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ बोलिबोभावतकान्हहीकोअरुदेखिबोकान्हरहीकोसुहा तहै । ह्वैगईकान्हमईदिनद्वैइमेंदेखिअचंभोहियेनसमा तहै । कान्हसोंज्योंमिलियोकछुऐसोजुदेखिवेहीकोजुदो रह्योगातहै । गेहतेकान्हकढ़ैजुकहूंतबदेहतेसाहूकोज्यो कढ़िजातहै ६४ ॥ अथत्रास । दोहा ॥ घनगरजादिकते जहांडरउपजैअनयास ॥ कंपादिकप्रगटैतहांतासोंक हियत्रास ६७ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ रंगनीलकीओढ़ नीओढ़िलईदिपैदामिनीसीजोकहूंउघरै । चलीभारी अँध्यारीमेंभांवतेपै धनधीरुतजैघनज्योंघहरै । ससकै ठसकैनसकैचलिआगेअचानकचौंकिकैभूमिपरै । बिन हीडरडोलैडिरानीसीप्यारीअचंभोकहाडरतेजुडरै ६५ ॥ अथवितर्क । दोहा ॥ हियसंदेहचलतरजनीभौंहखेंचिमुहँ नाइ ॥ कीजैकछूविचारतहँवितरकदियोबताइ ६८ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ कुंदकीबेलिधौंसोनकीसांटकछूयह जानीनजातिधौंकाहै । देखिबेईतजियाबतिआंखिन ओटभयेहरिलेतिउछाहै । याहीके पानिपासिंधुकेमध्य गयोमनबाड़िनपावतथाहै । दामिनीहैकिधौंकामिनीहै किधौंऔरैविरंचिरचीरचनाहै ६६ ॥ इतिसंचारिणः

१ निय २ नवाय ३ श्रोप ॥

अथसात्विकभावाः। दोहा॥ थंभसेदरोमांचस्वरभंगोवेपथु
मानि॥ विवरणताअंशुआप्रलयआठोसात्विकजानि ९६
अथआठोकोउदाहरण। एकैकविनमें॥ मदनकोवरणस्वद
लिसोगयोहै तनप्रगट्यो प्रसेदनकहेंमेंहाथपाइहै। उठे
रोम कंपैगातकहै तुतुरोहैबात अंशुवाहगानिरहेऊपरके
आइहै। क्षणक्षण मुर्छितकैछुवाक्षितिहैतिथातेंत्रीकंपरेमो
हिंतेरेसिंगारेसुभायहै। आजुकहूँकांहूमिसप्यारीतेंबनाइ
निधरककैनिहारेमरदनरैयारायहै ९७॥ अथहास्यरसः।
दोहा॥ थायीजाकोहास्यहैवहैहास्यरसजानि॥मुनि विरू
पतादिकप्रगटतहँविभावमनआनि २ ० फुल्लकपोला
दिकतहां आकृतिहिंअनुभाव॥ अवहित्थादिकपुनित
हांसंचारीहैभाव १॥ उदाहरण। सवैया॥ चौकमेंस्वां
गसोवेठ्योहैदूलहदेहमशानकीखेहसोंपागें। व्याहरच्यो
हैकिस्यालयहैकहिलोगहँसैंहिमवानकेआगें। बाहिर
कीघरहूकीहँसैंगृहकाजमेंकैसेहुकोउनलागें। नांगेमैंनिहा
रैंजवैइतियांअंचरामुहँदैहँसिकैफिरिभागें ९८॥ अथक
रुणा। दोहा॥थायीजाकोशोचहैतेहिकरुणारसजानि॥इष्ट
वियोगादिकतहांप्रगटविभाववखानि २ परगटअंशु
वाआदिदैकहेकविनअनुभाव॥ कहेंगलानिहिंआदिदै
तहँसंचारीभाव ३॥उदाहरण। सवैया॥ जीविकोआ
सरोकीजैकहाकहूँकोऊजियोविषकेअंचवेहमें। भूतभया
नकसंगभुजंगरहेलगिदूलहकीसबदेहमें। मीचुहिसौंपि
दईगहिबांहकहाकरिहैपरिहैजबखेहमें। गौरीकोगौनो
दयोपैबड़ोयहैशोचपर्योहिमवानकेगेहमें ९९॥ अथरौद्र।

१ स्तम्भ २ विवर्णता ३ स्वेद ४ रोमांच ५ वेपथु ६ स्वरभंग ७ अश्रु ८ प्रलय
अर्थकर्पोंआदिदेहर्षो॥

सो ५ ॥ पुनः ॥ सिरदनरैयारायरावरेकीतेगयहराजन
केआगेकविराजनवखानीहै । म्यानतेकढ़तचतुरंगचमू
वैरिनकीचहूंघा चलतिभाजिनहिंठहरानीहै । बड़ेबड़े
डीलनमेंपैठिकैटूकटूक अनूपमओवलअसीलअले
मानीहै । एकथारअदभुतऐसोकलुपानीहै सुखावतजु
शत्रुनकेमुखनकोपानीहै ६ ॥ अथशांत । दोहा ॥ थायी
जहँनिरवेदहैतहांशांतरसहोइ ॥ सतसंगादिविभाव
तहँ कहतसुकविसबकोइ १४ तहांक्षमादिककोकहत
सकलसुकविअनुभाव ॥ थंभादिककोजानियो तहँसं
चारीभाव १५॥ उदाहरण। सवैया ॥ धारणाकैकै क्षमादि
नहुंओभलेहुबुरेनकहूंअनुरागिहै । एकतहांथिरकैरहि
हैपरमानंदकेरसमेंफिरिपागिहै । साधुकीसंगतिमेंरहि
कैसबकर्मसमूहतेदूरिकैभागिहै । झूठभ्रकोस्नतेछुटि
कैमनसोंचकीबातमेंधौंकवलागिहै २०७॥ दोहा ॥ ऐ
सेनवहुरसनकेभेदनकहेबखान ॥ रसग्रंथनिकीरीतिल
खिसबैजानिहैंजान १६ यहअतिसुखदरसारणौपूरो
कीनोग्रंथ ॥ याकेजानेजानिहैंरसग्रंथनकोपंथ १७मर
दनराउनिदेशको सादरशीशचढ़ाय ॥ मिश्रसुकविसुख
देवनेदीनोग्रंथबनाय२१८ ॥

इतिरसार्णवसम्पूर्णम् ॥

१ चलो २ [illegible]

मुन्शी [illegible]किशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
मई सन् १८८० ई०